[illegible]

अध्यात्म रामायण।

गर्ग संहिता (गोलोक खण्ड:)

मातङ्ग दर्पण:।

भाव संहिता।

नरपति जय चर्या।

सर्वार्थ चिन्तामणि:।

लीलावती।

ग्रहलाघवम्।

वर्ष तन्त्र टीका।

ग्रहलाघव।

रमल शास्त्र।

लीलावती।

भृगु संहिता (पंचमी खण्ड)

आर्ष रामायण।

श्रीगणेशायनमः अथचमत्कारचंद्रकालिख्यते दो
हा तुलसीसोभतचरनमैंगलतुलसीदलमाल विह
रतराधासंगमैंजमुनातटनंदलाल १ ललितमा
धी ललितलालश्रीराधाकेहेत महलरहलविताकै
रै मधुमंगलसुसमेत २ सवैया मेजलकेजुलिरे
करमैंछविकंजलकेजनिमैंविलसीहै कंजनकेमदभं
जनलोचनअंगअनंगकलासरसीहै आनंदकंद
हैनंदकेनंदनचंदनबंदनबंदलसीहैं मंदहिमंदहिं
मुकुंदहसेअरविंदमैंकुंदकलीदरसीहै ३ अथ

भा०चं० वृंदावनवर्ननं कूजतकोकिलकेगनकुंजनमैं मत्तमधु
१ करनगुंजनसुहाये चारुलतालपटींतरुसोंसुखिधौंत
हनीपीयकेंठलगाये धारसजैंजमुनाजलकीचहुं
ओरविचारयही चितआयो नीलमकोरविहारसु
नोकरनारतैंश्रीवनकौंपहरायो ४ दोहा भाषा
भूषनग्रंथकोश्रीयजसवंतनरेस टीकाहरिकविक
रतहैउदाहरनदैवेस ५ जहांसुचंद्रालोकतैंभाषाभ
षनलहि लक्षसुलक्षनकेपितहकरतसुहरिकविसु
दे साद्रुस्यलक्षन उपमानरुउपमेयकीसमतोभास

रसादि आकृतिसीलरूवर्नगुनउपमांजहंनसुनाइ

७ अथउपमांनोपमेयलछन जाकीसमतादीजी

ऐसोसमसोउपमान जाकौउपमांदीजीऐसोउप

मेयबखान ८ अथवाचकधर्मलछन लीसेसोस

मआदिदैउपमांवाचकजांनि उपमांमरूउपमेयमें

रहैंसुधर्मबखांनि ९ अथउपमालछन उपमांन

रूउपमेयजहंवाचकधर्मसुचारि पूरनउपमांहीन

जहंलुप्तोपमाविचारि १० वारता उपमानादिचा

रौहोंयतहांपूरनउपमां जांनि जहांएकदोतीनहोंयसो

भा०चि० लुप्तोपमा ॥ अथ पूर्नोपमा जथा ॥ अंबुज से लोयन अ
२
मल मधुर सुधा सी बांनि ससि सो उज्जल तोय वदन प
स्व वसे मृदु वांनि ॥ ११ ॥ वार्ता ॥ अंबुज उपमांन से वाच
क लोयन उपमेय ॥ अमल साधारन धर्म जो उपमा
उपमेय मैं रहै सो साधारन कहावै ॥ अमल अंबुज औ
लोयन दोनों मैं रहै है ॥ ऐसे सुधा वांनी आदि मैं जांनी
॥ अथ लुप्तोपमा लक्षन ॥ वाचक लुप्ता स्व धर्म लु
प्ता पुनि जांनो ॥ धर्म वाचक लुप्ता ॥ उपमेय न हो
नो उपमांन हि पुनि जु ॥ वा अउपमांन हि ताकों लो

वधर्मउपमानएकउवमेयइहिभायो १२ अर्थवा
चकसाधारनधर्मउपमानइनतीनौंकोजहांलोपहो
इएकउपमेयरहै जथा कमलवदनसुंदरतामैंससी
कमलसेपाइ धनुभ्रकुटीतीयकीदियेंकचनबेलिसु
हाइ १३ वार्ता कमलवदनकमलसोवदनतामैंसोवा
चकताकोइहांलोपहै कमलसेग्रहनपाइहैसोलोप
हैधनुभ्रकुटीइहांवाचकधर्मदोनौंकोलोपहै कंच
नबेलिइहांवाचकधर्मउपमेयकोलोपहै भाखामैंनव
मोमेदउपमेयलुप्ताभीकहतहैं यथाविहारीसतसई

भा॰ वि॰ ३

पीयविछुरनकौंदुसहदुखहरखजातव्योसार उरजो
धनलैंदहपीयतननजनगंनदहवार १४ बारता उ
रजोधनउपमांनलोंवाचकन्नारोछोडवैधर्मउपमे
यनायकाकोइहांनही पुन:मूल पिककंठीगजगौनि
केसुंदरहैंमृगनैंन ऐसेउपमांहीजीगपैकहतकवीरस
मैंन १५ बारता पिककंठीपिककेकंठसोकंठकहैमनोह
रहैस्वरजाकोपिकजोहैसोकंठकौंउपमानहीं पिक
कौकंठउपमांनहेताकोइहांलोपहै उपमांनवाचीत
वदनहीहैसाधारनधर्मभीनहींहैनायकाविसेर्मेहै

नायकको उपमेय नही इहां केवल कौ उपमेय है उप
मान वाचक धर्म लुप्ता जांनी गै इसी तरह गज गोनी
मैं जांनी गै म्रगनैंनी मैं जांनि लीजीगै कोई म्रमेंग
हिनी उपमांने अनको देनहैं कहत है नहां विहारी के
दोहा मैं विरोध होइ जथा वरजीते सरमैं नकै गै
सदेव मैन हरि नीके नैनानने हरि नीके ऐ नेन ११
वाती सउपमा कोती हैं जहां सम्मुन नही उपमां
मा सैं कोती उपमा जांनी गै जथा भरथी उपमा
जो भरथा हि तहा तहै गाथी उपमां गैन चंद्र सम

भा॰ चि॰ मुखवांमजुवसुधावंधुहैंवैंन १७ बातौ वरौवरिबौल
५
तुहोतहै चंदमांकौवरौवरिबौमुखहै औसेसुधावंधु
मैंजांनीग्ये पुनःबिहारी नीचहीग्येहारबेरहैगहेमैं
इकेपात जतौमांथौमारिंग्येतनेउंचेहोत १८ बा
तौ मैंइकेपोमेंइकौनरहसाइसगहेहे भरथमैंमै
दसोजांनीग्ये औतौगरथीमैभेदगौरगंथनिमैं
बहुतहैं कुवलयानंदमैंतौएईभेदहैं अथमालोप
मालछन इककौउपमावहुतजहांमालोपनमोरी
न सफरीखंजनकंजसहैव्यारीकैनेनन १९ बातौ कु

कुवलयानंदकेमतमैंमल्लोपमाजुहीनही लुपतामे
एकउपमानहोतहैं नाहिलुप्तोपमामैंबहुतउपमा
नहोतहैंतहांमालोपमाजांनीयै अथरसनोपमा
रसनोपमजहवरनीयैंहोतजातउपमान तुलसी
मतिमतिसौंसुमनमनहीसौंगुरहान २० वार्ता तु
लउपमेयमतिउपमानजांनीयैं अथअनंन्वय
लछन उपमेहीउपमांनजबकहतअनंन्वयनां
हि नैरमुखसौंजगतमैंतेरोईमुखअहि २१ वार्ता
रहांउपमानउपमेयमुखहीहै अथपरजायोपमा

भा०चि० लछन उपमांलागैपरस्परसोउपमांउपमेय षंजन
१ हैतुवनैंनसेनुवद्दगषंजनसेय २२ बातो षंजनकी
उपमांद्दगद्दगकीउपमांषंजन अथप्रतीपलछनः
प्रतीपकौअरथउल्लस सोप्रतीपउपमेयकोजहां
कीजेउपमान लोयनसेअंबुजवनैंमुषसोंचंदवषा
नि २३ बातो अंबुजउपमानसोउपमेयदीषै
सैओरजांनिबें द्वतीयप्रतीप उपमेकौउपमानतै
आदरजहांनहोइ गरबकरतिमुषकौकहाचंदहिनी
कैंजोइ २४ लाहकततनिजरूपकोगरबकरैंमतिबाल

देखिसुदुनिझरउरवसीतोसौं बाधिक्षविसाल ४५

वार्ता इहांचंद्रमा आदितेनाइकाकौं मनोहरभयो

अथप्रतीय अनमादरउपमेयतेजवपावे उपमां

न तीअेनेंनक्षत्राक्षतेमंदक्षांमक्षेवांन २६ वार्ता नें

नक्षत्राक्षउपमेयतेमैनक्षेवांनउपमानसोतिनकौं

मनाहरभयो पुनः पोहनजिनजीयगरवधरिहे

हीकठिनअपार दुरजनक्षौमनदेखीअेंतुहितेलाष

हजार ४७ वार्ता येसेहींनांनीअें बोथोप्रतीप

उपमेक्षौउपमानजहसमतालाइकनांहि प्रतिउत्र

भावसि है

मृदुग मीन से कहे कौं न विधि जाहि ॥ ४८ ॥ वार्ता ॥ ओ दृग
न की मीन की उपमा देत हैं ॥ ओ अति उत्तम हैं ॥ ऐसे जानी-
ये ॥ अथ पंचम व्यर्थ होइ उपमान जहां वर्ननीय लखि
सार ॥ दृग आगे मृग खग कहुं न ए पंचम प्रतीप विचार ॥ ४
९ ॥ अथ रूपक लक्षन ॥ है रूपक दे भांति कौं मिलित रू
प उपमेय ॥ अधिक न्यून सम दुहुनि में तीन तीन ए भेद ॥ ५
० ॥ वार्ता ॥ उपमेय उपमान कौं एक करि वर्नन करे जहां
सो रूपक होत ॥ उपमान रु उपमेय मैं भेद परे न लखा
इ ॥ तासों रूपक कहत है सकल सुकवि समुदाइ ॥ ५१ ॥ वार्ता

सो रूपक द्वै भांति कौ है एक तद्रूपक एक अभेद रूपक सो
तद्रूपक तीनि तरह कौ एक अधिक तद्रूपक एक न्यून
तद्रूपक तीसरा सम तद्रूपक इसी तरह अभेद कौ भी
जानी जै ऐसे भेद रूपक के हैं अथ अधिक तद्रूपक
जथा मुख मानो सिवा लसि ते अधिक उदित रहत दिन रा
ति दुतीय सागर ते उपजी न इह कमला अवर सुहाति
३ ३ बातौ मुख ससि कह्यो एक ससि दूसरा राख्यो या
ते तद्रूपक वाकी जोति राति मै होति है याकी जोति राति
दिन मै है यह मुख मा अधिकाई इसी तरह अभेद कौ

भामविभ ८ यातेअधिकतद्रूपक इतीय उपमेयनायक्षागसिंधु
नाकीउपमांनलक्ष्मी तासोजुदोहीलक्ष्मीठहराइ इ
हसागरतेउपजीनहीं इतनीउपमेयमेंन्यूनताभई
दोहा नैनकमलएवैनहै ओरकमलकिहकांम यो
तो इहांसमतद्रूपकनैनकौंकमलकहोओरकमल
जुदोराख्योहै यातेतद्रूपक अथन्यामेद गमनके
रतनीकीलगेकनकलताइहबांम ३३ वातो इह
बांमकनकलताहैकनकलतनाजुदीनहींराखी यातेंअ
भेदकहगमनकौरहे इहअधिकाई अथन्यूनाभेद

अधरबोठबिंद्रुमसषीनहींलागरउनपेन्न वारना
सागरतेनहींउपजेयहउपमेयमेंअनंनता ॥ आईऔर
भीजांनीयें ॥ अथसमअभेद ॥ तुवमुषपंकजबिम
लअतिसरससुवासप्रसन्न ३२ वारना सरसाईस
वासना प्रसन्नता मुषमाभीहै औ पंकजमांभीहै या
तेसमअभेद ॥ अथसमबेहप बिहारी डोरैंगोडीग
ड़गाहिहैंनवटोईमारि चिबुकचौपमैंरूपठगहांसीर
फांसीडारि ३३ वानो भाषामेंअभेदरूपकमहत
है तदरूपकयोरहै ॥ अथहिनोधिकतद्रूपक मनिरामे

भ० वि० तियैनके मंदिरनतजिकरन ॥ ग्रीं वचसव औरै भावसिंह भौपलकनैतेजनरनियह ॥ और ४० वातो वह तरनिगौरहै यहतेजतरनिग्गैरहे यातेनदूपकजा नीग्रै वहविमनकै घरमें ॥ प्रावनहीं करैहै यातेहींनो क्तिनरूपक ॥ अथवरिनाम करैकौं याउपमांनहो वनैनी ॥ अथवरिनाम लोचनकंजविसालतैदेषोदेष तवाम ४१ वातो उपमानजोहैसोवनैनी होकैकु याकैर कहउपमेयलों मिलकै कीयाकैर कंजजो सोउपमान नेत्रउपमेय लोकंजजोहैसोविसास

नेत्र हैं इनैंदेषत हैं दारसन रूपक्रीयाकौं करै हैं
कंजकौं दरसन रूपक्रीया नहीं संभवै यातें ने
त्रसौं एकरूपकरि देषै हैं तातें परिनांम अल
कार रूपकमैं क्रीया नहीं यामैं क्रीया करनौ है
पुनर्विहारी जबत वहोत दिषादिषी भई ६७ ग
मीइल्लुग्यांक्क द गीति तिरीछी दीठि अब वहो वी
छीकौं डांक्क ४२ वतो वीछीकौं डांक्क उपमा
न सोई इहां डि उपमेय है जैसैं ह गे है अथ उत्प्रेष
मा उत्प्रेषा जु एककौं वह समझे वहुरीति गर

भा०।चि०
२

थितुधुरनतृतीय मदनसत्रुनिकालजनाति ४३
पुनः बहुविधिबरनै एककौं बहुविधिसो उल्ले
ष तरन भ्रजुन तेज रविसुर गुर बचन विसे
षि ४४ वार्त्ता पहलेमै एक श्रीकमलकौं अनेकन
अनेक जान्यो अथ सुमरन भ्रम संदेह सुमर
न भ्रम संदेह के लछन नाम प्रकास सुधिका
वति बावरन कौ देषैं सुधानिवास ४५ वार्त्ता
काही विरहनि की उक्ति है सुधानिवाल चंद्रमां ता
कौं देषि कै मुषकी सुधि आवति है ता तैं स्मरण

लंकारजोंनीअेें भ्रमजथा बदनसुधानिध
जांनिकैंतुवसगष्किरनचकोर वारता वद
नमेंसुधानिधिकीभ्रमा संदेहजथा बदन
किधौंइहसीतकरकिधौंकौलभाभोर ४६
वारता यहबदनकोचंद्रमाज्यादिमेंसंदेह
बिहारी छिनछिनमैंखटकतहोजंबरीभीरमें
जात कहिजुचलीबिनहींचितै बोठनिहीबि
चबात ४७ पुनःभ्रांताबिहारी रहीदहेंडी
दिगधरीभरीमथनीयांबारि फेरतिभरिउल

भा॰ना॰चि॰ टीरईनईतिलोवनहारि ४८ परस्परश्रोतत्या
२७ किंसुकसमओअलिगहीचोचसुग्गाकीआइ
जंबूफलसुकसमजिहैंपकरनकौललचाइ
४९ यारता इहांपरस्परकौभरमहै संदेहमाति
रोम वरनिपैनहिं बहुनरग बहुन अधरद
लमांहु कैधौफूलीदुपेहरी कैधौफूलीसांज
५० वर्ता अथशुद्धापन्हुतिलछन धर्मदुरे
आरोपतेसुद्धापन्हुतिजानि उरपरनहीउरो
जरेवनफलताफलमानि ५१ वर्ता वर्ननी

वस्तुकौं धर्म छिपावै वाकै समांन औरधर्मकौं
राषै तहां सुद्धापन्होति होति है उरोजकौं उर
नयनौं छिपाइकै कनककलतातौं कलपनौं राष्यौ
वर्णनीय कही औ वर्नन कही औ आक्रत कही
औ विक्रत कही औ ए चारौं नाम उपमेय कौ
है पुन: वे ई गड गाडे षरी उपटौ हारही वे
न औ मोरि मतिंग मनुमारि गुरु रामें न
र चतौ आरकौं उपटिवौ छिपाइकै मैं नके
उरनि में राष्यौ अथ हेतोपन्हुति वस्तु दुरा

भाभचि७ वैजगततेहैनोपन्नुतिहोइ होइसुधाधरनां
११ हिंयेहवदनसुधाधरसोंइ ५३ तीक्ष्णनचंद
नैंननरविवडवानलहीजोइ ५३ वारनागु
गतक्षहीगैंहेत तीक्ष्णननाहेत निसांविसेस
जिनहींयहहेत. यहविरहिनीनाइकाने चंद
मांकोंछपाइकैं वडवाग्निठहरायो आसमां
नरूपसमुद्रमे ॥थवरजनतापन्होति परज
नोगुनऔरकेऔरविषैंआरोप होइसुधाध
रनांहियहवदनसुधाधरआप २४ वारना

कोईवस्तुक्रोधमैंगुनछपावे वर्ननीयमैंठहरावै
केलीग्रैंतहांपरजत्राआनीग्रै सुधाधरमैंसु
धापनौंछपायौवदनमैंठहरायौ ऐसेजानी
यैं पुनः हालाहलविषहैनहींविषहेरमावि
चारि विषभषिसिवजागतमुहेपरसेरमामु
रारि ५५ सुगम ॥अथभ्रंतापन्हुति भ्रांता
पन्हुतिवचनतेभ्रमजवपरकोजाय तापंक
पकंपजुरहैनाहिसखीमदनसंताप ५६ वा
नौ सखीन्चारकीभ्रांतीकरिनाइकातेरहीहैन

भा॰ चि॰ सो नायक लै सखी सौं कहै है हे सखी यह ताप कैं पवन
१२ ही यह मदन की संताप है नव नाइका के बचन
ते सखी कौं भ्रम भयो विहारी केसरि केसरि
कौं न केरहे अंग लपटाइ लगे जांनि न यमन
स्याति कै न बोलाति अनेबार २७ अथ छे
कापन्हुति छेकापन्हुति जगति सो परसौं बात
दुराइ करत अधर छत नखीय न ही सखी सीत
रितु बाइ २८ यारता नायका को उक्ति नुमग
घर घर तकरत हैं घर के बाहर सखी पछे है ते रो

पीयाहैतवनाइकाबचनरसखीसौतरितु
कीबयारिहे ॥ अधरछतजरहेइहांचतुराईसो
छपायोनाइकाने पुनःविहारी रहीरुकीकैसहु
चलीआधीकरातिपधारि हरतितापसबद्यो
सकौउरलगियाखयारि ॥ ८२ ॥ बारता नाय
काजानायतिकहतिहै तुममेरे उरमैंलागिकैताप
हरैहै तववातिरतेसखीपूछेहै तुमारेयारहैत
बेनाइकाकहति है कै नाहिबयारिहै यहचतुरा
ईसौछपायोसखीबहुरंगिनि ॥ अथयछेकैता

भा०।व्य०। वापन्हुति कैतावापन्होतिहै कै कोमिसिमिलो
२३ चरनैं ध्यान तीक्ष्ननैंनन कै दास्समिसिमे दको
मकै बान है०। नारता कै नवबस्त्रपट व्याजलषि
मिसिइत्यादिपदन सों जहां सांचकौं छपावै तहां
कैतवापन्होति ओ नी गे कै दास्सछपायो कौ
मकै बाननिकौ मिसितैं पुन: तो मुषरचिमैस
सिवयां रच्यो विरंचि विचारि रेषकाठिवासेद
मिसि छेकदीयो निरधारि है१ वार्तासुगम
पुन: उडै उलूकसु गगनमैं मित्रतेज न लषाइ

यहदुषसौं अलिकैसुमि लिनीयकै वलनविदु
बाइ ६१ वारता वेसईजांनीयै अथ रूपकाति
सयोक्ति अतिसयोक्ति रूपकै जहां केवलही उ
पमान कैनककलतापर चंद्रमां धरे धनुष अरु बां
न ६२ वारता वरनीयकहीयै जाकौ वरननकरै
सो कविता मैं न होइ जांन्यौ जाइ तहां रूपकातिसयो
क्ति १ हकै नकलतासी नाइका चंद्रमां सो मुष धनु
षसी भौहैं बांनसे नेत्र सोध्यवसाना लछना
मैं जानीयै पुनः विहारी इतनै उततै उनतै औछ

भा॰ चि॰ नभुन ठहिरुड़हरराइ जहाँ तनपरी चक्करीमई फिरंग्या
१४ वैफिरिजाइ ६४ वार्ता इहां चक्करीतेनाइकाजो
नीगइ सापन्होयरूपकांति होइ छपायोकछु
कवहसापन्हवड़हरराइ सुधाभरोयहवदनतु
वचंदकहैवोराइ ६५ वार्ता वाकोन्यारयरूप
कांतिमयोक्कि वरनीयवस्तमें राखिवेकेलीयेंक्रो
ईउनछपायोहोइ नहांसापन्हवरूपकांतिमयो
क्कि जांनीगैवे सुधाभरोयह वदनतुववचनक
हैवचनवरननीयसोजान्योजातहै यातेसा

पन्हवरूपभ्रांतिजांनी १ ऐसे जहांपारनभ्रम १ औह्नपको
तिदैनौंहोइ तहांसपन्हवजांनी १ ऐसे पुनः मतिरां
मे मृद इंदु अरविंदमैं कै हे सुधा मधुबास वो
मुखमंजुल १ अधरमैं निनके प्रगट प्रकास दे है
१ अथ भेदभ्रांतिसयोक्ति १ अतिसयोक्ति भेद लछन
है १ औरै वरनन जात १ औरै हसिबो देखिबो औ
रै याकी बात है ७ वारता १ औरै हसिबो बोलबौ
बात १ औरै पद जहां होइ तहां भेदभ्रांतिसयोक्ति
पुनः मतिरामे १ औरै कछु चितवनि चलनि १ औ

भा॰ चि॰ रैसेंइ मुसक्यांनि ॥ औरै कछु सुख देत है सकै न

२५ बैन बखांनि ॥६८॥ अथ संबंधातिसयोक्ति ॥ स

बंधातिसयोक्ति जहां देन ॥ अजोगमैं जोग यापु

रके मंदिर कहत ससि तें ऊंचे लोग ॥६९॥ बातनौं

ससि सो मंदिर ऊंचो इह ॥ अजोग ताकौं जोग ठ

हरायो या तैं संबंधाति जांनीगें ॥ पुनः भवति

तेरे दांनन मैं जे है मेरु बिलाइ रहिहै दिन मन मैं

रहौ चकई के मुख छाइ ॥७०॥ बारतौ मेरु कौ बिला

नै ॥ अजोग ताकौं जोग बरन्यौ ॥ पुनः बिहारी त्रिय

मोंननिकोपांहहहकरनजतनअतिआप जाकी
दुसहदसापैरसोतिनहूंसंताप ७२ बारना सो
तिकोंसोतिकेदुषनेसंताप अजोगजाकोंजोग
कह्यो अथसंबंधातसयोक्ति अतिसयोक्ति
दूजीजहांजोग जोगबषान तऊकर आंगैव
ल्यनतऊपोपावेसनमोन ७२ बानी इहांकल्य
नतऊकोंलहासनमांनकेंजोगहेनाकों अजोगक
ह्यो पुनः नगीपनगीनाचहोंनैनातोइनिहारि
नहींसुधारस आदरोंतुववचस्तुतिमेंधारि

भा०गचि० ७३ बारतामुगम ॥अथअक्रमतिसयोक्ति ॥अ
२६ तिसयोक्ति ॥ अक्रमजहांकारनकारजसंग तुस
रलागतसाथई धनुखे ॥ अरु ॥ अरि ॥ अंग बार्ता
जहां धनुख ॥ अरु ॥ अरि ॥ अंग मे एकसाथ लागतहैं
धनुखमेलागनकारन ॥ अरि ॥ अंगमेंलागनका
जे सोदुनोंसाथहैं ॥ अथचपलायोक्ति चपला
उक्तिगुहेतकोग्यांनहोतहीकाज भईसुक्रं
नमुद्रकायीयागमनसुनआज ७४ बारता
पीयाकोपरदेसगमनहेत नाकोग्यांनहोतहीमुर

री केकन भई नायक परदेस चलैा नहीं पुनः भाग
उडावति धन षडो ॥ आरै वीयाभडाक ॥ अधीवा
ईक्षाग गल ॥ जाधी गई तडाक ॥ ७६ ॥ वार्ता वेसही
इह भाषा पंजाबी है ॥ अथ अत्यंतातिसयोक्ति
अत्यंतातिसयोक्ति जहां पूरव पर क्रम नाहि वान
न पहुचें अंग लौं ॥ और पाहिलैं मारि जांहि ७७
वार्ता पाहिलै वान अंग मैं लागे है तब अरि मरे
है सो क्रम नहीं ॥ अथ उत्प्रेक्षा लछन उत्प्रेक्षा
संभावना वस्तु हेतु फल लेषि है तु फला सि

भा॰चि॰ २७

वासवद्र असि घासवदमांन वाचक जहां नक
हैं तें गम्योत्प्रेक्षा जांन ७६ वार्ता संभावना क
हिये ऐसे लक्षन सो उत्प्रेक्षा तीन प्रकार एक वस्तु
दूसरी हेतु तीसरी फल सो वस्तु दोइ एक उक्तास्प
द दूसरी अनुक्तास्पद जाकी संभावना कीजीये
सो संभाव्यमांन जाके विषै संभावन कीजे सो आ
स्पद संभावन कौं विषै कहीये सो संभाव्यमांन
और संभावन कौ ठौर दोंनौं रहै तहां उक्तास्पद
वस्तु उत्प्रेक्षा जांनीये जहां संभाव्यमन रहै सं

भावनाकोंविषैनहींरहे क्रियाकेआगेमानौं
किधौ निश्चै लौ इत्यादिवाचक आवैतोअ
नुक्तास्पदावस्तुउत्प्रेक्षाजानीयैं अथउक्ता
स्पदावस्तूत्प्रेक्षा चक्रवनकीविरहागनिसौंघूम
मनौ तमदेख नैनमनैंआरविंदहैस्तातजिना
सविसेष ८०। वारता विरहिनीकोवचनइह
तमनहींहैमनौचक्रवानकीविरहअग्निकोधूं
महैंतमविषैसंभावनाकरीहै तमसंभावनाको
विषैविरहागिकेधूंमकीसंभावनानामैकरीधूं

भा॰चि॰ मसंभाव्यमानवस्तु है ॥ आस्पदसेभावनाकरिवेकौ
१८ ठिकांनातमदोउ वस्तु हैं याते उकौ आस्पदवस्तु त्येषा
भई याहीतरह नेत्रनाविषै ॥ अरविंदनिकौ संभाव
नाजांनीजै यामै उकौ आस्पदवस्तु त्येक्षा विहारी म
कराक्रातिगोवालकै कुंडलमलकतकांन धस्योस
मरहीयघरमनो डौढीलसतनिसांन ८९ यातौ
इहांकुंडलवस्तुविषै कांनके निसांनवस्तुकौसभा
वनाजानो ॥ याउकौ आस्पदवस्तु त्येक्षा रंगत
हेमलंगंगकौ गंधकारानिसिवाधू वरषतमा

नो ग्गंजना हि थरी ग गना निसांन ८२ वार्ता
अंधकार कौं फैलवौ जो न्यौं सो इहां वर्ननीय
है सोई संभावना कौं विषय ठैका मोहै इहां तम
कौ जो फैलवौ सो संभावना कौ विषय सो नही
कह्यौ तम अंग कौं लगै है इहां कह्यौ अौ गगन अंज
न कौं वरषै है तम फैलवौ उपमेय औ गगन कौं
अंजन वरषनौ उपमान ता में अंतर भूत है फैल
वौ उपमेय नही कह्यौ वरषिवौ उपमान कह्यौ ता
ही मैं अंतरभूत तम फैलवौ विषय जु ता नही कह्यौ

भा०चि० यातेंऽनुक्तास्पदहावस्तुउत्प्रेक्षा ऽथफलुगमरीति
२६ नहींहेतफलसंभवैंकीयाखुवाचकजोग ताइ
ऽनुक्तोविषयकहवस्तुत्प्रेक्षालोग ८३ वि
हारी देख्योऽगनदेखैकह्योऽथऽगलवेरि
खाइ पैठतसीतननमैंसखुचिवैठीचितैलजा
इ ८४ वारता इहांपैठतकीयासवहैंताके
ऽअंगेसावाचकहैहेतउत्प्रेक्षाऽऔफलउत्प्रेक्षा
कौसंभावननहीं यातेऽनुक्तासवदजांनीयैं
जहांकीयाकेऽअंगैवाचकऽगावैंगेनहांइहीहै

इगीं गोरन ही पुनः ऐसे चतसी चितवनि चितै
भई औ ठगसे लखाय फिरि उजकनकौ मगन
यानि इगन लगनी यांलाइ ८५ वारता रै
सई आंनी ऐसें अथा सिखा सपेदा पासि खाय
दाहे तउ ऐसे छाला लखन जहां रहे तको हेतके
रिसे भावनानि हठोर सिखअसिखापद देवै हे हेतु
छाछार ऐार ८६ अथा मनो चलीगां गनकौ
नतातेरातै पांय वार्ता नायकाकै चरन
पहीलाल हैं कठोर आंगनमैं चलैसौं नहीं क

ठौर अंगनकौ चलिबौ अहेतु है अकार नहै तातें चरनकी
ललाई कौ हेतु मान्यौ है तिनकी संभावना करी औक
ठौर अंगनकौं चालिबौ सिद्ध ही है कठोर अंगनमैं तौ
सहाद्रिरनौ हैं यातें सिद्धास्पद हेतूत्प्रेक्षा जांनी
मैं अथ असिद्धास्पद हेतूत्प्रेक्षा चंदकंजतैं वै
रमन तुव मुखसमता चाय ८७ वारतो चंद्रमाके
कमलकौं परस्पर वैरु है नायका के मुखकी चाह जो
है सो आस्पद है आस्पद नाम विषयकौ सो असि
द्ध है यातें असिद्धास्पद हेतूत्प्रेक्षा जांनी अै

अथ सिद्धास्पद। असिद्धास्पद फलउत्प्रेक्षालछ
न जहां अफलकौं फलकरि मांनै फलउत्प्रेक्षा दु
विधवर्षांनै दोहा कटिकुच धारिवेकौं मनौ बांधी
कंचनदांम वातौ कटिकुचधारनकौं रहै यहसु
तौ सिद्ध है कंचनदांम करि जांनी गई कटिकुचकौं
तौ धारन नहीं करै अफल जो है कुचनिकौ धारनौं
ताकौं फलकरि संभावन कीयौं यातै फलउत्प्रेक्षा
जांनी गै कुचधारनविषय सो सिद्ध है यातै सि
द्धास्पदा जांनी गै। अथ असिद्धास्पदा परसम

भाव चि॰
२०

ठोर॰आंगनकोचलिवो॰असहनुहै॰अकार नहै नाकोंचरनकी
ललाईकौहेहेनुमान्यो हेतकीसंभावनाकरी ॥ औकठो
रअांगनकौंचालिवौ सिद्धहीहै कठोर॰आंगनमेंतो
सदाहिरनोहि है याते सिद्धास्पदहेतउत्प्रेक्षाजानी
यैं ॥ अथ असिद्धस्पदहेतउत्प्रेक्षा चंद्रकंजतेवै
रुमननुवमुषसमता पाय २७ यामे तो चंद्रमांकौ
कमलकौंपरस्परवैरहै नायकाकेमुषकोपाइजो
हैंसोआस्पदहे आस्पदनामविषयकौ सोअसि
द्धहै याते असिद्धास्पदहेतउत्प्रेक्षा जानी ॥

॰अथ असिद्धास्पद॰ असिद्धास्पद फलउतप्रेक्षालछ
न जहां अफलकौं फलकरिमांनै फलउत्प्रेक्षाद
विधवर्षांनै दोहा कटिकुच धारिवेकौंमनोवांधी
कंचनदांम वार्ता कटिकुचधारनकौरहैयहसु
तौसिद्धहै कंचनदांमकरिजांनीगई कटिकुचकौं
तौधारननहींकरै अफलजोहै कुचनिकौधारनीं
ताकौंफलकरि संभावनकीयौं यातेफलउत्प्रेक्षा
जांनीगैई कुचधारनविषयसोसिद्धहैयातेअसि
द्धास्पदाजांनीगैई ॰अथ॰ असिद्धास्पदा परतम

भा० चि० ताकौं कमल जन जलसेवत हैं बांम ८८ याती क
२५ मल नकौं नाइ काके चरननि कौ समता की प्राप्ती
जौ है सो जल मैं तप करी जांनी गई सो चरन की
समता प्राप्ती जल बास कौं फलन ही कमल तौ
दै जल मैं रहै है चरन समता प्राप्ती अफल ताकौं
फल करि मान्यौ यातें फल उत्प्रेक्षा चरन समता
प्राप्ती सो असिद्ध फल है एतें असिद्धा पद जांनी
जै ॥ अथ गम्योत्प्रेक्षा विहारी करउडाइ घूंघट
करन उसरगु उजपट नोट सुखमैं मोंटै लूटी ललन

लखिललनाकीलोट ८६ वार्ता ललनाकीलोट
त्रवलीतनकौंदेखिनायकमांनोगुथकीमोटलू
टीमांनोजांनोइत्यादिवाचकनहींहैं होइ अर्थमे
सोनेजाइनहीं गम्योत्प्रेक्षाजांनीएै अथासिद्धा
स्पदहेतु बिहारी लगीअनलगीसीजुविधिक
रीखरीकटिछीन कियोमनोयाहीकसरिहुवनि
तेवअनतियीन ८० वार्ता कुचानितकीपीनता
सुनेसिद्धहे कटिकीखीनताकसरिग्रहेनु ताकौ
हेतुकरिसंभावनाकीयो। कटिछीनताकीकसरि

भा०चि०
२२

कमनीकौ घ्द्व है हैं सो प्रसिद्ध है याते सिद्धास्पद जोनी में
मनौ कठोरत्व ही गुणसे पाठ होइ तौ गम्यो त्प्रेक्षा जा
नी ॥ दोहा ॥ रजनी मैं नहीं रवि रहैं दिवस न निसाकर
हीन याते मनो प्रसाद जस रघुवर वरगर कीन
मानौ श्रीरामचंद्र नै अपनौ प्रताप जस सब गदरी
यौ न हांहेतु ठहराय्यौ रविचंद्र एक रात्रि दिन मैं नही
रहनौ अहैं तकौ हेतु करि मान्यौ रविचंद्र कौ नहीं रह
नौ या सिद्ध है ॥ अथ सिद्धास्पद जगदुग निज रूचि
संगले मानौ ॥ अथ यौ भांत याते मांनौ जगत मैं र

यतनहीजहांन ॥२२॥ वानी लोगरात्रिमेंनहींदेखेहैं
क्योंकिसूरजआपनीहीचक्केसाथजगतकेनेत्रकीहानि
लेगएहैं यस्केतनहींनाकौहेतठहरायोसूरजआ
पिनहीजोतिलेगए यहअसिद्धास्पदहै यातेअ
सिद्धास्पदविषहै पुनः बिहारी ललनचलनसुनि
चुपरही बोलीआपनईठ राख्योगाहेंगांढीगरो
मनोगलगलीडीठ ॥२३॥ पुरदिनहोतहैकुमुदिनीज
लजजातसकुचाइ यातेमानोचंद्रमुखराखतवर
नदुराइ ॥२४॥ असिद्धास्पद फलउत्प्रेक्षालछन

भा॰चि॰ चाहत ससि निज जनक कौं वा कौ पुरु अपार । विरहिनि
२३ नीय के दृग नु मनु भाद्रत ओस धार ॥ ६४ ॥ वार्ता
विरहिनि के दृग ते जलधार भाद्र वो समुद्र कौं बाढ़ै
ता कौं फल संभावना ता की ऐ समुद्र कौ बढ़वो तो सवैते
सिद्ध है ये ते सिद्धास्पद है पुनः नीचे पिचें नितंब
नितउ वारै चिकुर लेन ससि मुष तु वक्राट कौं म
नौं छींन करन के हेत ॥ ६५ ॥ वार्ता वेसहि जो नीपै
अथ असिद्धास्पद हेतूत्प्रेक्षा आवत उन्नार कौं पु
रवि पहै का जल जाइ पुष्प महे है अस्व मनुं फेरन

मनिरहराइ ॥ ६७ ॥ बानी खरजउत्राउ इनहैं नीता

कौफूल छोडावहलननैं नही अफूलकौफूलठहरायो

अरवकौफेरवौ आसिद्ध है यातेमालिकासपदजोनी

औ दोहा ॥ फूलनकीमालातिवैछिनछिनफूरतसि

गार ॥ तोइमनोवसफूरनकौ बाहननंदकुमार ॥ ६८ ॥

पुनः उ ॥ चहोइकुचवसकौ ऐनमसुरगौसुरपाल

लटकहैं मानौं अवैजीतनकौपाताल ॥ ६९ ॥ अथ

तुल्ययोगितालछन ॥ तुल्ययोगितातीनविधिलछ

नकहनसुजान ॥ होइअवनहवनकौ एकैधर्मसमा

भा० चि० २४ न १०० वार्ता ॥ अथ रतन जो है ताको वर्ननीयके गुरा
कीया हृदय धर्म ये ज्ञ वरनै नहीं तुल्य जो गिमा जया
को कछु भन नाहि लहत है सो भाउ रजउ तंग वैननैनवा
के भए जगढत जो वन ॥ अंग २ वार्ता वस्तु न कुचव
नै नीयके सतसंग पाइ ॥ अथ वस्तु न को कछु भ सो भान पा
वनीय हृदय धर्म कह्यो यह ग्रंथांतर मैं है वस्तु न
यो वन के सतसंग पाइ वस्तु नहीं है वैननैन कौ वाकपनो
यह धर्म कह्यो पुन: वनी कमल की सैरनी वदनल
को चतजाइ ॥ वार्ता ॥ २ ॥ ह वस्तु न चंद्रोदय कालमे

कमलखेपारिनीचनिनीय प्रकासेमेडरतहै ॥ओोवोरि
नीताको बदनको कीयाहुपरेकेनीं ॥अंन्यादिषायो
॥अंगैगुनकों ॥अंन्यदिषायोहै दोहा तुकअंगको
सुकुमारतालषिभाषतमातिमोर चंपककुंदकुसम
ललीलगतगुलाबकठोर ॥२॥ बातो यहनाइकाको
सुकमारतासुन ॥यावनेचंपकआदिनाकोक
ठोरताहुपगुनताको ॥अंन्यदिषायो ॥याइसरी
गुनसोजहडतेकेडसोसमकरिकहे ॥अनूप ॥३॥ध
नहजमलोकपतिवहत ॥औोरयहभूप ॥३॥ बातो

भा०चि०
४२

इहांराजावर्ननीयसोगुनकरिउत्कृष्टाईइहांतिन
कौंसमकरिकह्यो तीसरीलछन सत्रुमित्रपैचित्र
समहोइसुजोरप्रकार गुननिधिनीकेरतनुतिय
कौंहरिकौंहार ४ वार्ता चित्रकौ अर्थव्यवहार
अथदीपक दीपकवर्नीवर्नेकौं एकैधर्मसमान
जितेग्रहगनगुनवंतकौंहोयउच्चतामान ५ वा
र्ता गुनवंतवर्ननीयगिरिश्राद्रिश्रावर्नताकौउ
चैताधर्मएक जथा गजमदसोनीयनजनसो
सोभालैहतवनाय ग्रंथांतरे उपमांनतउपमेय

कोइकपदलगनलुहाइ नाकोंदीपककहतहैलक
लखुकविसमुदाइ ६ जथा घनकरिदामिनेल
सतहैनीलांवरकरिवाल गजमरसोनरपतिजसों
सोभालहतविसाल ७ अथआव्रतिदीपक आ
व्रतिदीपकतीनिविधिआव्रतिपदकोहोइ पुन
हैआव्रतिअरथकोइ दुजीकहीयेसोइ ८ पदअ
रुअर्थदुहूंनिकोआव्रतितीजोलेखि घनवरष
तहैरीसखीनिसवरषतहैंदेखि ९ जाती आव
नकैंअर्थफेरपडनैं निसकौंवरसनोंअंधकार

भा०वि०
२६

है नोप्रहपदकौं ग्राहनहै पुनः फलेवस्तकदेव
कै कैतप्रबिरासे ग्राय वातो बिजासिवो फलवोये
कै ग्रर्थहैयह ग्रर्थावित्रिहै जथा मक्रमयोहमो
ए ग्रह चातकमनसरार फु० वातो इहांसद ग्रर्थ
एवहै ग्रथग्रनिपत्तपमा प्रतिपत्तिपमवाक्यहै
उपमे ग्रहउपमान तिनके धर्मसुभ्रनहै जेदेजु
देपजांन ११ जथा सोहतभानुप्रतापकारिजस
नचांपकरिसिर बिबधरसांवनसे ई ग्रेतजीग्रे
वैननहर १२ वातो भानुउपमान खरउपमेय

प्रनापउपमांन चांपउपमेयलसैसो भावदकौ अर्थ
येकहे सोवतसो भाकैं जुदाजुदापदकरिकहो
नहां उपमांन उपमेयकौ एकसाधारन धर्म जुदा
जुदापदवनैहोइनहां प्रतिवस्तूपमांजांनी अथ
दृष्टांत जहां विंवप्रतिविंवसोद्रष्टवाक्पद्वौ
त भांतिवां नसमतिहोन्योनहीं रतिवंन १३ वा
तौ जहां उपमांनवाक्यउपमेयवाक्यकौजुदेजुदे
धर्म होय औ विंवप्रतिविंवभावकरिदिखायौहो
२ विंवप्रतिविंवकौ अर्थ एकवानकौछायाये

भा०चि०
२७

कवातमैं होय मिलती बात होय न हां कुसांत भल
कार कांतिकी रतिकै विंब प्रति बिंब विभाव पुनः
विहारी दुसह दुराज प्रजानिकैं क्यौं न बढै दुख दं
द अधिक अंधेरो जग करत मिलि मावस रवि
चंद १४ सुगम अथ निदर्सना जहां उपमेय सुवा
क्यमै उपमा वाक्य सुजोग जो सो कारसु निदर्सना
कहत सबैं कविलोग २५ बातो जहां उपमेय वा
क्यार्थ उपमान वाक्यार्थको जैसो सब्द करि सं
जोग होय यार्थ करी ऐकता करे तहां निदर्सना प

रनकौंसमझहसोवाक्यार्थ पदकौंअर्थसोपदार्थ
जथा दानासमेपोसुअंककविनपूरनचंदमकास जो
उत्तमींठेवचनसुवरनमांहिसुवास १६ आतौ
दानाकौसोसमयपनौंसोउपमेय वाक्यार्थ औपूरन
चंदकौअकलंकतातोउपमानवाक्यार्थतौ
जोसोठहरायो दानाहोयकरारवचनकहेपूरन
चंदकलंकतेरहतहोइ तोदोउसमानहैं औ
जहांएकपदमेंएकपदकौआरोपहोयसोरूपक
जथामुखचंदइहांमुखपदार्थकौंआरोपकीजै

भा० चि० तासों हृदय कौ जो मीठे वचन है सो सुवर्न मै सुगंध है
२८ इनौं २ कमल मैं है अथ दूसरी निदर्सन । बे जहं उप
मेय धर्म उपमां धर्म सु ग्यांनि उपमां मै उपमेय कौ
धर्म धरै सु बखांन ॥ १७ ॥ जथा बैजन की लषि च
पलता गहै तिहारे नैंन जल दीते रे मच्छ की पोन
लई है ऐंन ॥ १८ ॥ टीका उपमेय नैनन मै बेजन उप
मांन तिनकी चपलता धर्म लीयो । मच्छ उपमेय
कौ धर्म जल दीपोन उपमांन नैनन मै लीयो । मतिराम मे
जबकर गहे नकमांन सर देत अरिन कौ भीति १

भावसिंघमैंपाइहैं सवगआरजुनकीरीति १८ वार्ता

इहांभावसिंघउपमेय आरजुनउपमानकोधर्म

राख्यो अथतीसरी जहांअसनतसनतकोंकरेकी

याहीतेंउपदेस तीजोकहतानदर्सनाभेदकविमा

हिसुदेस १९ जथा रविसोंनिसितमवोघाईन

भनविरोधीनांस जितवतकलानिजवद्धिमासिक

रिहितकुमदविलास २० वार्ता जहांअसनतकीया

करिअनिष्टआरथकोंसमझायो अथवासत

भलेकरमकोंसमझायोतहांतीसरीनिदर्सना

भा॰वि॰
२८

रविसोतमनिसिअंधकारनासकीयाहै सोजगत
विरोधीकौंनासकीयासमुआयो चंदमेंनैंअप
नीविधिसौंहितकौंभलौकरनौयहजनायोपूर्वा
र्धमेंअसदार्थनिवंदना उत्तरार्धमैसदार्थनि
वेधना पुनःसदर्थनिवंदना मधुकरहमसरि
षौंतजौबारिकैपानमधुपीति बगदकरनहैजग
तमैंयहीकुटिलकीरीति २१ बानीप्रीतिकरि
त्यागनौजोहोसोकुटिलकीरीतिकौंप्रगटतहै पुनः
सदर्थनवंदना हरिमुखलखिलोचनलषोमु

बसौं करत विनोद मगन कौं तनु वलयन कौं है चं
द्रौ दे मोद २२ अथ व्यतरेक व्यतरेक जु उपमान
ते उपमेय अधिकौ देष मुष है यै जु जैतौं सषी मौठी
बात विसेष २३ बातौ जहां उपमान ते उपमेय अ
धिक्रौ होइ कै उपमेय ते उपमान अधिक होय
सो व्यतरेक उपमेय मुष मैं मीठी बात विसेष
पुनः विक्रति कीयतीयपसौं हासि मैं कछु घौ लषोरि
डौं नाहीं न चंद मुषी मुष चंद तैं भलौ चंद समरौ
न २४ रहै वषघडुह नमे कुयौ पढावत कामलौ

भा॰ चि॰ बर्नकौं सुष देत है आनन कौं हासि धाम २५ वार्ता
३० मुष उपमेय चंद्रमा उपमान ता में कछु विसेष नहीं
॥ अथ सम है उक्ति सो सम है उक्ति दोस संग्रही बरनन मर सम
ए साय श्री रति आलि कुल साथ ही सागर पहु चीआ
य २६ वार्ता अलिकुल जो रुक्मिणी रति साथ ही के
हो कोई राजन कौं कहत है सेवा समान कौं ॥ अथ अ
सा लागे विहारी छुटत मुठी संग ही छुटी लोक
लाज कुल चाल लगो दुहुनि इक बार ही चल चित
नैन गुलाल २७ सुगम ॥ अथ विनोक्ति लछन

है विनोक्ति द्वै भांति की वस्तुन कछु विन छीन जो सोभा
अधिक लहै वस्तु न कछु यहु हीन ॥ २८ ॥ जथा पि
य मन रंजन द्रग अली अंजन ना विन सोभैं न ॥ बोलि
सकु न सरसा नन तूरं चरहु बाई है न ॥ २९ ॥ याती वस्तु
न कही अैव र्णनीय सो ते अंजन रहत है अैसो र
काह बाई विना अछी लागत है ॥ प्रतिताम विषयन
ते निर्वैद वार ध्यांन जोग रतन नेम । निफल जांनियो
अैसे विन प्रभु पद पंकज प्रेम ॥ ३० ॥ पुनः देषन दीप
नि सीप कौ देत ग्यांन अहत है ह ॥ जतन ए कपतंगमे वि

भा०वि०१ नाकपदकौनेह ३१ अथ समासोक्ति समासोक्ति
३१ अप्रस्तुतनेकुरैजुप्रस्तुतमांज कुमदिनहंफूलतभई
दीषिकलानिधिमांज ३२ यातीजहांकोइगस्तु
तकौवर्ननकरैतामैअप्रस्तुतकुरैसोसमासोक्ति
इहांमांजकौवाननयौरैहै तहांकुमुदनीस्त्रीलिंग
है औरकलानिधिपुलिंगहै आप्रस्तुनायकानाइ
कभीजांनेजातेहैं विहारी नहींपरागनहींमधु
रमधुनहींनहींविकासइहकाल अलीकलीहीसौं
बंध्यौआगेकौनहवाल ३३ यातीजोमोर

हीतैक्रैहै तौनाइआनाइफ़ जांनेजातहै ॥ अथपरी
क्षर है परिकर ॥ ऐसेलीगैंजहांविसेषनहोइ ॥ हि
मकरवदनीनायकातापहरानिहैसोइ ॥ ३४ ॥ यातें
जोविसेषजनावैसेषना जाकौभिंनक्रीजी ॥ ऐसो
विसेष्य हिमकराकीकिरनैहिमकरचंदमांसोमुष
सौतापहरैहै सोविसेषनहैसोकह ॥ अथयकेली
॥ ऐहैजोसीतलहोइहैसोतापहरैहै ॥ विल्हरी बाल
वेतिनकीमुषदयहहदीहषराम ॥ परिगहइ
होकीजी ॥ ऐमुरलसौंविछनन्यांम ॥ ३५ ॥ यातें

भा० टि० घनस्यांमश्रीकृस्नकौ विसेषन है घनस्यांम होइलो
३२ लोंचनहे अथपरिकरांकुर साभिप्रायविसेषन
है परिकरअंकुरनाम स्लोक दीपकमें है नैकन
मोनतिवाम ३६ वार्ता नहीं मोनतयाबातपर
बैरे है योंमसाभिप्रायविसेसपद है योंमदुष्टकों
भीकहतहे बिहारी जसअपजसदेषतनही
देषतसांवलगात कहाकरोलालचकरेचपला
नैनचलिजात ३७ वार्ता नैनपदविसेसहे पा
को अर्थनैननांमनीतिकौ है नीतिजिनमेंनहीं

सोजलसबपवनसमेपोहैपैगे ॥ अथश्लोक श्लोकअ
लंकृत ॥ अर्थ ॥ वैंहु जहा सब दे मे होत होइ न प्रान
नेहा विन मुख दुति दीप उद्दोत ३८ वार्ता ॥ अने
क ॥ अर्थ ॥ एकृ पद मैं होइ ऐकृ वरनन सौं लागै द्वै रव
नैं वरनैं सौं लागै तहां श्लोक नेह नाम तेल कौ औ
दीप्ति कौ उद्दोत मुख कौ प्रकास ॥ औ दीप कौ प्रका
स मुख वरनैं दीप ॥ अब वर्नता कौ ॥ अथ श्लोक वर्नी वर्न
आया पीन पयोधर ॥ अंग छवि न मधारे आ
भिराम हरै सुकेसी मांन कौ वृंदावन हित स्याम

भा०चि० ३९ बानी पयोधरकुच पयोधरमेघ नगही
३३ र ॥ आदि नगपर्वत ॥ अभिरामसुंदर दोउ. केसी द
त्य मुकेसीभ्रमरा ॥ भवन नवलन सों है हितजा
को श्रीराधाजीको वृंदावना है नेह स्यांमांना
मकी कहां को किवा स्यांमाकों मांको कारको ल
धूपको है जैसें बालाकों बालकहत है स्यांमा
सोलावर्षकी इस्त्री कों कहत है इहां दोउ. वर्नो
वर्ने है ॥ अथ ॥ गयमसुतको जथा ॥ अति ॥ अप्रभु
लालेपिली मुख्यजन में रहन सदाय नितक

मलनिकौहारतछविनिरैनैननभाय ४० वार्ता
सिलीमुषनामबानकौ ।जौमौरकौ बननाम
जलकौ ।यौउद्यानकौ इहवान ।यौमौरदौउ
कौवनहैताकौमलेष ।यथा ।यमलुतयमसौ
यलकारहै मातकौ ।यमलुतिपरमंस ऐरू
बानयलुनाबिनाइजौयमुनहैस ४१ वार्ता
पेकैताजल ।यमलुलहीवानेहोइ ।मौरपैन
हीलागेइसी ।भूमरि ।मौरपैकहै ।मौरपैलागे
सोपांचतरहकौहै ।२ षकारतानमैकठिनजान

भा०। प०। मिलैं नहीं कहैं जथा धानि यह बरचाग्यानकी
३४ सकलसवैसुखदेन वार्ता ३ इहां केवलग्यांनचर
चा परलगे है जोरपैं नलगै दुः विषुराषत
हैं कै छहर आपधरो पहहेत ४२ वार्ता सि
वनै विषदुख ताकों आराधन कियो वाहि
नै आपगेगाजलकी नलताकौं धारो राजा
नैकोई दुख ताकौं राख्यो है ताके दवाई वेदली
जैकोई गुनीजनराख्यो है याकौं अन्यो कैसी
कहतहै विहारी पटवाषैसबकौंकरौसप

परेईसंग सुषीकरेवापहुमिवेरैक्षैतुहीविहंग

४३ वार्त्ता इहांपरेईकवूतरताहीपरलैगे देहा

कांधेक्षेत्रवांधिक्षैजोकीनेमहाराजे क्षुकर

योधर्तीहैवहाश्रीरकुलके पनगाज ४४ वार्त्ता

इहांराजानेकोईनीवयौंवडाकांमदीयाहै तामे

कहूंचतुरश्रीउाक्के यथपयुनांकु र मनुतमं

धुरहै कीयोमनुमेपरताप महांगयो यलि

केवडेछोडिसुकोमलजाप ४५ वार्त्ता मधान

जोमनुन ताकोंवुझावनहारोइन्तो मनुतवेन

भा०चि० वर्ननीयमेवर्ननीयद्वैरे सखीह्वैहेजोभोरमा
३५ लतीकोंछांडकेकेवडेंगरेहे इसरोषधीनमञ्जु
ननायकाकीसखीह्वैनायकसोंतिउपदेसभीकि
योहे ऐसीनायकाकौंछोडकेवाकेपासक्योंगये
३ उ.मतिरांम सुबरनबानसुबरनसुंदिसरसब्ब
नसुकमार ऐसेंसेचपवजैतजेतोहेमोलगमार
४६ ।अथपर्यायोक्ति परजायोक्तिप्रकारदोय
कुरचनानेवात मिलकरिकारजसाधिंएकजोवा
कुचितेसुहात ४७ बातोजोबातनसधीकहतें

होर नातो विसेस चमत्कारी नरहवान यामें है
सो प्रथम चतुरव है जिह गुनगरो विन गुन डारी
माल तुम हो उर बैठे हो जात न लाल नन ताल ४
८ वार्ता पंडितानें यह कह्यो जैसें आयो बैठो
डी होर पधारिगे हे जथामतिराम आवे
लोचन करुन है कुवलय कमल मकाम सोभा
उमोपल के हीगे भरत नित वास ४९ वार्ता
भगवान कहनोतो ताको एकु ८ वना कर कयो
चंद्रमा सजें भगवान के नेह जथा विलास

भा०चि० ३३

लखिलोनेलोयननकेकौयेनहोइनआजकौ
नगरीवनबाजिबैठकनछैदौरतिराज ५० बाती
सखीकीउक्तिनायकासौजोहोइतौकौननाइ
काघासजाउंगेकोगेलोछकलालितकहिये
कैनगरीवकहीगलीताकों।निबाजोगेकहांकों
मनुष्यकहेवसनक्रमहरे पहरचनोते अथछ
लवोकाज विहाती लरिकालैवकेमिसनल
गरमोढिग आइ गयो अचानक अंगुरी
छलीछोलछुवाइ ५१ बाती लरिकालैवके

मिसकरिइहसाध्यौ छाती धुवांनो अथवा
जस्तुति निंदा अस्तुति तेज हां स्तुतिनिंदाको
सो न व्याजस्तुतिताको कहें जे कवि मांह सुजा
न ४२ बाती जहां स्तुतिनोनिंदाकौ सो नहोइ
निंदानेस्तुतिमैं सो नहोइ जथा निंदामिस
स्तुति बानीजीतसुनरककौ यह अचरज
हे मोहि चिरगचढाऐ पतितनसैगंगकहाक
हैंतोहि ४३ बानी इहांगंगाजीकीनिंदामि
सिस्तुति पुनबिहारी कहालदैनेहगकेरपो

भा० वि०
३७

लालकेहाल कहुमुरलीकहुपीतपटकहुंमुकट
बनमाल ५४ वार्ता नैनकुंगसोंगैसेकहाहै
जौतैनेलाडिलेकोदेहे जिनलालकोंविहाल
करिडारेहैं इहनेत्रनिकीनिंदासोनेत्रनकोंस्तु
ति ।स्थस्तुतिमेंनिंदा तोयतोविनपीयक्को
नकोकरीहैं तनमनताप भाजीदेपहरीवड़ा
।आईहैं वदग्रन्हाइ ५५ वार्ता ।।अन्यसैंभोग
दुखितनाकीउक्ति इतीवीस्तुतिनिंदा दुमस्तु
तितेस्तुति धनिरहेनौ ।।श्रवनेगुननहेनहतल

दरग्मातिचैन वाकेडरिमैं रहतहै वासडीसदिनैरैन ४६ वार्ता इहांरसनकीस्तुतिसौं डाढीकीस्तुति समथ व्याजनिंदाल छन व्याजनिंदानिंदाहितै निंदानिंकरतहोइ सदाछी नकौनैनसौंचंदम दहैलोइ ४७ वार्ता जहंएकनिंदासौं दूसरेकी निंदानिंकरैतहां व्याजनिंदा विरहिनीके बच नहैं इहां विधाताकीनिंदासौं चंदकीनिंदा मनिरामें प्रगटकुटिलताजो करैहमये ध्याम संताप मधुपजोगविषउगलिवो कहानिहारो

मा०चि० दोस ५८ बानी मधुपक्षीनिंदातेक्षी अमक्षीनिं
३८ दा पुनः कोकिलकलरवकौंरचे विरहिनिकौं
उरसाल राषतहैंतेसीसर्पैंनिरदैमहारसाल
५९ बानी इहां ग्रांमकीनिंदासौंकोकिलकी
निंदा ॥ग्यग्राछेप चपमकार॥ग्राछेपहै
प्रथमानिषेदाभास पहलेकहीगे॥ग्रापकौ
छुपाइहैं॥ग्रेतास द्वै॰ बानी जहांनिषेदको
॥ग्राभासहोइ सोगध्यम॥ग्राछेप जोइतौहै
ताकोइतपनीवैपे॥जाइजैविविधबातनिषसे

दूसरि वेकों कहै तामे नहोय ब्रह्मनौ निकसे सोइ सो
जथा सीताकि रनि दे दरसनु ॥ गाथ वतीय मुष
आइ जाउ हई मोजनन मई चले देस तुम जाइ ॥ १
२ बातो चंद्रमाकों दरस चाहत पहलें कुरि विचा
रिके षघो डीयाको मुष हैतो कों दरस न गछत
पति को कीउ कि तुम पर देस जाहु यह विधि
कर्तव्य बात कों उपदेस सो विधि तुम जाहि दे
स जानहो ताही देस मे हमारो जन्म विधाता
देइ जन्म को आर्थे नातें आपनो मरिबो जनो

मा०चि० ३६ नायो तासो मातिजाहु ईहानिषे ८ पुनमातिरानेनि
हौनकहत तुमजानीयैं लाल बालकी वात ग्यां
स उडगन गिरत हैं हौं न चहत उतपात ई२ भी
ती कहति है फिर है है हौं नहीं कहौ हौं विहारी
मो हिदी जो गये मो बुझ्यौ अनेक पानि तनिदीयै
जौ वाधै ईनो षतौ वादौं अपने गुनन ई३ वार्ता
पहले आंन मो ज्यों फेर फेरी जो मो हन नहीं देउ
तौन देव जो तुमे बांधे ईनो षहतो अपने गुन
नमें बांधो विधि मैं निषेद कर्यो है पुनविहारी

ति
सदनसदनकेहुरनकीसदनछुटैहरिशराय हूवैतिने
विहरनतिफिरोबिनताविहरतनङतगगाय ६४ बाती विह
रनतिफिरोइहविधिसोंगौरठौरमतिजाइ पहवको
बोधवाके प्रभावतेनिवृरैहै पुनः मोहसोंबातन
लंगेलगीभीभजिहनाय सोईलेउरलाइगेलाल
लागीयननपाय ६५ ग्रथविरोधाभास भासेजहां
विरोधसौंवहीविरोधाभास कुधिंग्रांगेसुधिजा
तिहैवहसुधवंत्यकास ६६ बाती जहांविरोध
कोआभासहोइ विचारतेनहोइ तहांविरोधाभास

भावचिन सुधि अंग ग्रैसुधि जाति है यह विरोधाभासो आरे
४१ नेकैसे जाति हैं अथ वानायक के सुधि आए ते मु
खचंद्र कासनते सारराग ते मूरछा होइ है बिरही कौ
उर्जे बिहारी त्यौत्यौप्यासइ रहै ज्यौज्यौं पीयत
अघाय सगुन सलौने रूप की जिन चष त्रषा
बुझाय ६७ पुन: या अनुरागी चित्त की गति सम
झै नहीं कोइ ज्यौ ज्यौं बूडै स्याम रंग त्यौंत्यौं उजलौ
होइ ६८ सुगम अथ विभावना होति छभांति
विभावना कारन बिन हीकाज बिनजावक दीने

चरनकमलनलयेमेंआज ६९ वार्ता जावककैदेंना
लालीकोकारनहेसोविनाजीवककीनलालभयो
जासोंउपजेसोकारनजोउपजैसोकारजसुनि
कारनभूषनकारज विहारी विननीरानेविपरी
तकोकरीपरासिपीयपाइ हासिमनवोलेहीदे
यौउत्तरदीयोवनाइ ७० वार्ता उत्तरवेनावने
कौवोलनाकारनहेसोविनावोलेवनायो अथ
रसरीतिभावना हेतअपरवते जहांकारजप्रनहो
इ कुसमवानकरगहिमदनसबजगजीत्योजाइ ७१

वाती जीतवे मैं हेतु कही ॥ कारन बांन है तामैं तीछन
ता कठोरता नहीं तो भी जगत के जीतन का जस
यो विहारी तीज पर वसौंतिन लजे भूषन वसन
सरीर सवै मरगजे मुह कारौ उहीं मरगजे चीर ७
२ वाती सौतिन के मुष मैं लो कन का कारन मरगजे
चीर नहीं ॥ अतिसुं रवस्त्र सौतिन कें मलीन करे
है नहे सो वस्त्र मैं वाहुल्यपनो उज्जलता नहीं
तो भी कारज कीयो ॥ अथ तीसरी विभावना ॥ प्रति
बंधक के होत ही कारज पूरन मानि निशु दिनसु

कैसेंगतिनिकउ नैनराम्रकीआंन ॥७३॥ इहांसलेसमेस्रुति
कहैवेदकीजकीसंगतिहोयनाकोरागद्वनानही
जैस्रुतिसंगतिअनिवंधकहैतोनाभीरागसमयो
रागस्लेष ५ न: चालिवलिमोहनदेषीएचित्र
हैवैरगात नैनवारिसोंचुवतनउ होएतापसरसात
॥७४॥ तौं वारिसीचिवौनादिकौंसंवंधकहैतोभी
संभवै अथचेष्टीविभावना जवैंप्रकारनवस्तु
तैंकारजुप्रगटतहोय कोकिलकीवानीगवैवा
ननसुन्योंकपोत वातींकोकिलकीवानीकोकारन

भा०वि०
४२

कोन्हिलहै कवूतर कारनहै तातें राजिभयो रू
पोत असोनायकको कोइहुयो है दिलकी सीवानि
पुनमतिराम हसतवालके वदनतें यह छविविर
दतफूल कली चंपककी वेलिनते झरत चमेलीफूल
७९ विहारी पुनः इहकांटे मो पाइ लगि लीनीमर
तजिवाइ प्रीति जनावत भीतसों मीत जुकाढौ
आइ ७६ वार्ता कांटे जिवायवेकौ कारनहीता ते
जीवौ कौ कारजभयो अथ पांचमीविभावना
का हकारनतें जहांकारजहोइविहरु मोहिकरत

संतापयहसषीसीनकरसुन्द ७७ वार्त्ता कहंविरह

कारनतेंकारजउपजेसीतकरतापकोविरुद्वहे

तासोंतापभयो विषमी कीयोजुचिंवुकउदाइके

कैपतकरभरतार टेहेईटेढ़ फिरटेढ़ातिलकलला

र ७८ वार्त्ता टेढ़तिलकजोहैसोलाजकोकारन

हे गरवकोकारननहीतासोगर्वकाजभयो ग्र

थग्रथमी पुनिकछुकारनतेजहांउपजेकारनरू

प नैनमीननतेदेषीग्रेसरतावहेग्रनूप ७९

वार्त्ता नदीसोंमीनउपजेहैं इहमीनकारजतासो

भावचि० नदीआनंदउपजीहै नेत्रमीननकोसोनदी॥ सखी
४३ जानी॥ पुनःमानेराम भयोसिधुतेविधुसुख
विवरनतविनाचि[illegible]नविचार उपज्योतोमुखचंद
नेहपपयोधि॥ अपार ॥८०॥ अथावेससाक्षि वि
सेसोक्ति [illegible] जहांहेततेआनंदउपजेंनांहि नेह
धरतहीयमेंनहीकोमदीपचितमांहि॥८१॥ वी
नोहेतुठहरैकारजनउपजे जैसेदीपजरेहेंन
हेनहीधरेनेहमेंसलेष नेहतेलगोप्रीतिवि
हारी नेह नैननिकौ बच्छ उपजीवुरीबलाइ

नीरभरे नित पीयत है नउ न प्यास बुझाइ ८२

वार्ता नैन नीर भरे पुनि प्यास बुझाइ वेकौ भाव यह जो कछु ... नहैं सो प्यास न गई ॥ अथ असंभव कहै ॥ असंभव होत जहां तिन संभावन काज गिरधर धर हैं गो पसुत को जानै इह काज ८३ वार्ता जाकी सिद्धि होइ विना संभावना विना जित कीर यह नहीं गोप को बालक गिर धरै गो ८३ ॥ असंभावना ॥ उन ॥ अंक बंकनि नथौ रतेनहीं लखै गुन ग्यांन कुविजा वसि करि है कहा गे सो सुंदर को

भावाचि०
४४

न ८४ ॥ अथ असंगति ॥ तीनि ॥ असंगति ज्ञानि अ
हकारन न्यारे ठाम ॥ और ठौर ही कीजीये ॥ और
ठौर कै काम ८५ ॥ और काज आरंभीये ॥ औरकी
यै ठौर ॥ कोइल मधु मांतो भई अंमाति ॥ बौमोर
पई वातो कारन मलीके मधुपान कोकिल मै
कारज अंमनाशांवमै मति राम राधा के दृग
बेलमैं मंदे नंदकुमार करन लगी दृग [illegible] सोम
ई छेदर वार ८७ ॥ यदुलरी तेरे भ्यार कीग्रं
गना तिलक लगाइ यरोइ लीलरी मोहमियमयो

नाहिहरि मोह लगायोग्याइ २८ वार्ता हे राज
नेतेरेड रते नेरे सघुनकी नारीतिलवाइमेलगा
यनीहै तिलके भालमेंलगायो याहीखेमोषां
इनेमैलगायेहे पुनचिहारी पलनपीकसेजंम
इगनधरेमहावरभाल ग्याजुमिलेगुभलीक
रीभलेवनेहैंलाल २९ तीजीगाथे मोहमिद
इवो[illegible]वनभयोग्याइके मोहलगायोयातेतीस
री [illegible]संगति पुनःमातिरामे उदितभयोहेज
त्वदतजगकोजीवनदेन मेरोजीवनलेतक्यो

भा॰वि॰ कैसेन्सुवैरकहैहैन ६० ॥ अथ विषम अलंकार विष
४५ म ॥ अलंकृततो निविधि ॥ अनलाइककोलेग कार
नकौरग ॥ औरहैकाहज ॥ औररंग ६१ और मलेउ
घमकै होत बुरो फल ॥ आइ कहकोमलतनती
यकोकहांकामकी लाइ ६२ वार्ता नायकको
मलतन ॥ औ कोमाग्नि लाइकै नहीयातें मथमा
दूसरी खडगलता ॥ अतिस्यामतै उपजी औररति
सेत तीसरी सखीलीगै ॥ छानसा रतें ॥ अधिकताप
तनहेन ६३ वार्ता खडगलताकारनस्यामकौर

घन

त्तिकाराजसेत पुनः षीति बीजुरी स्यांम इह स्रगदा तैसे

देख बगटै उज्जलनीरतें अहू नभ मल अवरेख

२४

नौसरी आथे मनले जपतेनोर कै तांको उधमकरे

लोसों नाक्रारा फूलमिलेन लंतीसरीखपरलगोयो

लोनापक्रेनासक्रोंनालें इनोमरै पुनः विहारी

लोनैमुखहीठिनलेगयाक्रोहदीनोंई० इनीहो

लागनलगोदेग्वेरदिठोंनांदोह ६९ ग्रेषम

मा अलंकारसमतीनाविधिजथाजोगकोस

ग कारजमैंजहांपाईयैकारजहीकोंअंग ॥ ६ ॥

भा॰वृत्ति
४६

श्रमबिनकाद्जसिद्धजहउदमकरतेहोइ हारवा
रतीयहीयकीएश्चपनेलाइकेजोइ ९७ यातौ
हारश्चोतीयकौउरहौनौंश्चनूपहेसमांनहैताको
संबंध्यानतहै मतिराम लालकरतश्चनुहारहे
तूनलघातिबीहिवार ऐसेउरजकठोरतौंत्या
यतिउरजुकठोर ९८ दूसरी नीचलेगश्चचर
जलहीलक्षमीजलजाश्चादि जसहीकोउद्य
म.कीयौंतौंकैपायौंताहि ९९ यातौकारनजल
ताकौगुनलक्ष्मीकाजमेपायौयातेदूसरीसम

जोजहांजसकोंछुमकीयोतहांविनछुमजसलाभ
नयौ पुन: मोहितेरीवातमुहिलागतिअतिही
लाल वदनसुधाधरतेमगटहोतिक्छोहसिली
ल २७० ननोष मनहिछुदावनकोंकोयोछुदौ
मांनल्नाषिलाल हिलिमिलिदोउकुंजमेंविह
रेवषोलाल २ अथचित्र इष्यापूलविपरीत
कीक्नीजेजहांविचित्र मवनतउद्यतलहतजे
हेपुरवषवित्र २ बानीनमितहोनेतेउच्चेताल
हेनो पुन: त्यागकरतहैंधनीकोंधनपावनकेया

भा०टि० ज मोनरहतकोनजेहै मोननहीतुहिराज ३ वार्ता

४८ धनीभगवांनमोनवडाईकहतहै अथअधिक
आधिअधिकआधेयतेसूछमहोइअधार उ
उंगरीकीमुंदरीहतीसोभुजकरतिविहार ४ अ
धिकाईआधारतेसवआधेयकीहोइ जोअधा
रआधेयतेअधिकआधिकहैसोइ ५ वार्ता रह
नेवालाआधेयजोमेरहैसोअधार जथ सात
दीपनवखंडमेंकोरतिनहींसमाति सवदसिधु
केतोजहांतुवगुनवरनेजाति ६ वार्ता सातदी

वऽ आधार कौ ऽति आधेय कौ आधेकाई सब्दोसें
आधेय गुन आधार कौ आधेकाई बडे आधारते
आधेय ते आधार कौ आधिकाई नहां आधेयातें
आधार जो नीकें जेसे तरवारि ते म्यान बडो म्यानते
तरवारि बडी पुनः जामन मेंसब ही बसेन ही
यनें सम्पात वाती मन आधार तेनें आधेयकी
अधिकाई यथा जसे विस्वजा नें सुहरि वृजको
नसुहात ७ वाती हरि आधेयते वृज कुं आ
धार कौ आधेकाई पुनः आवन ता की पीय दूर

भावति ते चढि कै महल उतंग । अंगन अंग समाति है । यं
४८ त्र उद्दाघि उमंग ८ वार्ता सुगम अथ गल्प
अल्प । अल्प । आधेय ते सूक्षम होत । आधार उ
गली की मुदरी इती सो भुज करी ते विहार ९ वार्ता
मुदरी आधेय सूक्षम ता ते भुज । आधार की
सूक्षमता सूक्षम पुनः कवि । ते । अति छीन है त
पि मृनाल कौ तार । ते रे कुच के बीच मै नहीं पाव
त से चार १० वार्ता मृनाल कौ तार । आधेय सू
क्षम है ता सौ कुच के बीच । आधार ता कौ संकीर्ण

तासुमैं पुनः आसपास सबगांमके प्रतिबिंब
तसुरहत तसमावकहनां लहैं तामैं तनकप्रवेस ९१
याते अनआधारलेसलावके आधेयसोग वेस
नहींकरसकै रे अथ अन्योन्य जहांपरस्पर उपकै
अन्योन्यालंकार सासिसौं निसिनीकी लगैनिसिही
सौसासिसार ९३ याते सासिसौं निसिनीकीलगेत
सिसैंसासिनीकै जथामतिराम तराखौसखिलाल
भरिनिजउरमैंबनमाल तेराखैनिजलालकरिकंठ
मालकौलाल ९४ याते आलनैलालमकौबनमा

सा॰चि॰ लाखरी ननननमैं लालकौं कै ठमालकौं लालकीयै
४६ इहांपाव्य उपकार ॥ अथ विसे पालेकर तीनसको
रविसे घरे ॥ अनाधार आधेय वडीवस्तु सोसिद्ध
कौ कछु आरंभजुदेय १८ वस्तु रचकौं कौ जो आधार
ननठांम अनेक नभऊपर केचनलता सुमनलवछ
है रचक ४४ वार्ता नभआधार नहीं तहां केचनल
ताबीजुरी सुमनचंदमा मतिराम चलो लालबा
कौ रसालखो कहीं नहीं जाइ हीयरे है सुधिरावरी
हीयरे गयौहि हिराइ २६ वार्ता ॥ कतो ॥ वस्तु आधेय

रआधेयकहोयकैहलते । जहांबालसिद्धिआधारतेवि
न औरआधारमे आधेयवर्ननहोइ पुन: जहांप्र
सिद्धआधारविन औरहोइसुवास रविकोकिर
नैंदीपायीतिनमकोकरनविनांस २७ वार्ता रवि
प्रसिद्धआधारविनाहीपकौं औरआधारनामे
किरनैंआधेयकैंतमनासकीयौ पुन: कल्पवृछ
देख्योसहीतोकौंदेषतलैन अंतरबाहरदिसवि
दिसवसीतियापुषदेन २८ वार्ता हेराजनतो
कौंदेषिबेकोआरंभकीयो है दुर्लभजोकल्पवृछ

मा॰ वि॰ ताकौंनेत्रनसौंदेख्योपाछेंइसरौविसेष ॥ औरएकन

४९ इच्छाकोअनेककठोरवनीनीपननीसरौविसेषजा

नीऐ पुनः तोहिबोलिऊतहौलयोसचीउरवसी

वोम साधुपाक्यावतलख्योलं दरबपुघनलोम

पुनः कैलीदेसविदेसमेंनेतेरीऔरतिराम कीयोध

बलसवतरनगररहेनकोउरलाम २० वार्तारेत

कौरतिकौअनेककठोरवनेनकीयो ॥ यथ्यापात

व्याघातजुऋधुऔरतेकीऊऊराजऔर वहीं

विरोधीतजेवेकाजेलाई ॥ कठोर २१ भाती मौ

रिाजकरिवेकौवहुतसौंमोरकाराजकै जैसेवड
ते ब्रनकोटै वहुरिविरोधीताको मर्चै ब्रछीता
हुजोकोयाबनीहोय सोपराएकौंदब्रकाजतोरनकौं
विरोधीतोइनहंडुल्लरैस्यापाछान नथा सुषपाव
तजोतोतुजगतासोमारतमार दयाकरोजोपाल
यहसगलेचलोमुयार २२ वाता कलनंघिपेको
चलुहैंतासोंकोमममारेहै यहप्रथमा कोईराजा
पनेवेटकोंजुवराजेदेवै चत्यौहै राजानेंकहीचाल
कइहोंगाहैनेरेवतहै वालककौकौउक्ति ओमोकोवा

मा॰ ति॰ ५ लकजानन होतोइहांरहनौऊ चेतनही नहींसंगले
२२ जानेकोकारन बालकसोई॰ अवस्थलेगके जानेको
कारन भयो ॥ अलंकाररतनाकर पीयत्वेछुरताव
धिवरपरिऊत दिधरेसवहेत जेनिरषतसुषदेत
तेतानिरषत दुषदेत ॥२३॥ बातो इह॰ अौरकारज
करिवेकोरसुसों॰ अौरकारजकीयो मतिराम जो
पैलषिब्रजगाममेघरघरयही चवाव तोहरिमु
षलषिरेनाकिन नैन चकोरनचाव ॥२४॥ बातो
इहांविरोधालोकाजे साधेपे पुनः नहिलोभोद्ध

८

नरे न है हारि लै कामांनि दीनाधन कौं देत है दारिद ।
लै कामांनि ॥२४॥ वर्ता ॥ इहां उत्तर सों तिउत्तर है पहले
अर्थ कौं दूसरो अर्थ विरोध भयौ ॥ अथ कारन मा
ला ॥ कारन कौं काज पर परा कारन माला होत ॥ नीति
हि धन धन त्याग पुनि तातें जस उद्दोत ॥२६॥ वार्ता
येक येक कौं कारन होइ रे कौं जि होय कैरि दूसरौ वाते
काज हीं काज होइ ऐसे जहां होइ सो कारन माला नी
नीति कारन धन कौं धन काज सो धन कान भयौ
पुनः नेह बढे तें मिलन सखि मिलै बडो सुख होय ।

भा॰ चि॰ चाहतु है पुनि विरहत तन यह तनु नीकैं जोइ ॥ २७ ॥ पुनः
५२ गेयथांतरे कवित्त ॥ चित्र प्रदवहु जासो तेरो जग जस
वास बढै जस ते बढन है मैं आदर बढन है आदर
ते मन न तहां वचन प्रमान लहै वचन प्रमान होत सं
पति कहत है संपति होत तही सु धर्म लौं सनेह बढै
धर्म कै सनेह पाप दूरि रहि कहत है पाप दूरि होत ही
स्वरूप सु कहता को पावै पाऐ सु स्वरूप ब्रह्म सु जग मैं म
हत है ॥ २८ ॥ पुनः लछन द्रव्य प्रकाज जहां हेतु सु
गोगि होत म कारन माला कहत हैं जाकैं ग्यो न होत ॥ २९ ॥

जेथा नरककरोत्तै है पापते पापी तरारि द जोनि हरि
दहोतग्य जोनने दान करनतूं दान ३० वाती नर्के
काजें पहलैं कह्यो पापपाछें कह्यो ग्यथार कावली
रहनमुके कीरातिपहहे कावालेनहां जोने द
रश्रुतिलौं श्रुतिवाहुलैवाहु जेपलौ मोन ३१ वातौ
रवकोजाहे ता उत्तरकौंगहे उत्तरको पूर्वकौंगहे
ग्योंगहीकोंगहे तहां डुगभ्रोनकौंगहे कोननैं इनकौ
नहीगह्यौ वाहुकौंगह्यौ पुनः कहांलुं जलनहकै
मलनहीं कमलनमौरसुवास नहीं मौरजहांलुं ज

भाषाचित्र नहिगुनक्कैरहुलास ३२वार्ता सुगम ग्रथमाला
४३ दीपक दीपक्कएकावलिमलेमालादीपक्कनाम
काम धामतुवहीयतुमत्तीयहीयक्कीयविश्राम
३३ वार्ता दीपक्कअलंकारमेवनीवनेकोएकध
मेचोहोगवे इहांएकधर्मकोग्रकमवाहोग्ये इहो
पहेलीयोइनतोईजांनोग्ये कांमनेतीयकेहीये
मेधांमकीयोतीयकेहदेतुमारहदेमेधांमकी
यो कोयोतीयहकीयाहैताकेग्रन्थोंतेदीपककै
ईम्रावरनदीपकमानतहेसोनहीकामकोनहीयहै

यहै इबारहै याते कौ मनैं नैनी पक्षौ हौ योग ध्यौ ति प
हौ यनै तुमै गध्यौ यह एकावलीजांनीयै ॥ पुनः
कन कबालि मैं कौ कनद तामैं स्यांमत राज नामै मृ
इ मुख ज्यां नि है तामै लसै मनोज ॥ ४ ॥ वातो लसै
यह धमै सौ है पक्ष ॥ २ ॥ हु नत्याग कौ जो गसो एका
वलि जहां बरतौ मात्रा कौ सो न तहां रूपकां तेसयो
त्रि ॥ पथ सार ॥ येक एक ते साधे क जहां ॥ स्तंभो
रसोसार मधु सौ मधुरा हैं सुधा कवितानघुर
॥ अपार ॥ ३५ ॥ बातो यह नलै गुनसों ॥ अधिकाई

भा॰वि॰
५६

पुनः तीनन तूल अरु तोलन तें हलके जो जाचक जो तिन
पवन न ताहि गगन वत है मांगन डरत उड़ि जाति ॥ ३
६ ॥ यातें जाहु गुन दोष दोउ तें सार होइ ॥ जथा व
डे लघुन गुन जातें मुदित ताको है अलसमान ताहु तें ख्या
सा वडी यह तू नीकें जान ॥ ३७ ॥ अथ जथासंख्य
जथासंख्य वरननविषें वस्तु अनुक्रम संग और
और मित्र विपक्ष को गंजन रंजन मेज ॥ ३८ ॥ यातें
और को गंजन करै। मित्र को रंजन करै विपक्ष को
मेजन करै यह क्रम तें वरनन है ॥ पुनः वरनपरे

विषवल्लबहनरकौमारनहार नहींछोडैनहीभोग
ईधनकौकृपनगमार ३९ वार्ता सपनेवरेजोन
छोडैनही विषवल्लजोनभोगेनहीं धनकौइहां
भीजयासंख्य ॥ अथपर्जाय देवराजापरअनेक
कमतेहैआश्रयपेक परिक्रमतेजचरेकेकोग्रा
श्रैलहतअनेक ४० जथा हतीतरलतासरन
मैंभईमंदगततआइ ॥ चुजनाजेतीयवदनदुति
चैदरहीवनाइ ४१ वार्ता नायकाकेचरनमेंचं
चलताती ग्रवमंदताआइ चरनरेकवहार्थता

भा॰वि॰ ७ मैनरतामेंहुताशोंआछेभई तोयकौविरहनकीडाि
५५ दिनैमैंत्रभुजबनाइरहीअंबरानिकैंचं दसैंषना
री पुनः कथहिमेजननजिअवानिमैलुठतीविर
हदुषपाइ अबहुचंदनपंकमैसोवातिकुलसमाविष्ट
॥ ६२ वार्ता सेजआदिअनेकउपाकोहे पुनः
प्रथममिलनकीयचाहकीहीयमैंबसीसुआइ
आवनमिसकोविरहाबसोबसीकोमनकीलाइ
६३ वार्ता इहनायकाहीयेपेकंतामेवीयमि
लनआदिअनेकउपायनकभयो अथप्रवासिरह

पारतलीजे ॥गादीजहथोरईकछुदेत लेतभुक्तिव
मुमुक्तिकोधूपनुलामिकोदेत ४४ वार्ता महांथो
रेदेकैंबहुतलेयनुलमीकोधूपथोरोभुक्तिमुक्ति
लेनबहुतहै ॥गलेकारत्याग्रे ॥ वलीचितजो
करचैढवडुरिमकवडूदेव यामेकोनलाघनहेविं
नोलेव ४५ विहारी महितमनेहसकोचमुबहे
हकेपमुलकयांने प्रोनयानकरि ॥आपनेप्यांनहरे
मोपानि ४६ वार्ता वोनदेकेजांनलैरभ्याहेक
वोनरहांनागवेतजोनीमे ॥ जयपरिसेख्यालं

भा०चि० परसेध्याइकथल बासजेइ जेथलठउहराइ नेहग्योति
५६ हीयबैनहीबसीदीपमें०आइ ४७ बातो रेखब
हुकेऐक्कहोरानिबेरेइ सरीहोररांख्योदीपमैनेह
होनेठहराइहदमेनिबेरे पुन: भूषनजसनहि
रतनहैकरिबोसुक्रतनदोष चक्षुविनाहैनेल
षेभलोछमानहीरोष ४८ बातो इहामीतदेही
नेनिषेदभयो पुन: केनधेयभगवानहैकानी
केहसतनमंगबासजोगकोहजथलीकोपियरहैह
रि०जेस ४९ बातो ध्यानजोगभगवानहैयहबि

विधि औ नहीं इह निषेद अर्थसौं निबैसै है अथ
विरुध्या समबलकौ जु विरोध तातें नहीं विकल्पसु
यापि म्र पतिवलि नाताइ है अरिकौ मित्रकै चापि
५० पातौ अरिकौ सिर नवनौ और चापन वावनौ प
समबल है ताकौ विरोध हैं जौ तिसौ न वाग्यौ गेतौ
लराई नहोइगी औ चापन वाइनौ तिरनहीं नवे
गो पुन: मौनकीयौ सोषिकैं मते त्रतिहीं वरोपवै पीय
डाइ तथैह कौ हित गौ तिकै वसिहो है अर ५१
थातौ औ तोहितकौ रागतौ वसन नहीं होइगे जौ

भावचि वस्त होइ गेतो ॥ ग्यान हित नहीं करै गेसे सेजो नीग्ये
४७ ॥ गय समुचै लछन दोय समुचै भाव बहु कहइक
उपजत संग एकु काज चाहत कीयो हो ॥ अनेक कौ
ढंग ४२ वार्ता बहुत किं बा एक कौ भाव रै कही संग
उपजैत हां प्रथम समुचै ॥ यो जहां ॥ अनेक एक का
र्ज कौ कहा चहै दोहा तुव ॥ अरि भाजत गिरत गि
रि भाजत है सत राय जोवन विद्या धन मद न म
हउप जावत ॥ जाय ४३ वार्ता एक ही समै मै ॥ अरि
न कौ भाजिवो ॥ आदि कीया उपजी याते प्रथम

औजोवनविद्याधनआदिदेहैजोवनकेहैऔ
महीमहउपजावैगेविद्याकहैमहिउपजावेगेम
हउपजावनाकाजसाजोवनआदिकीनोचहन
है पुनः अघनअछनाडिगआयकेवोलेघन
वेन चलीडरोरिओलोहसोछपाएनेन २४ वो
नो आलेआसेनायकेनेनाइकाकेनमंदेन
तवचकीआदिकीयारेकवाहीउपजीइहोरे
कीरिषेयनेकेभावभरे पुनः अकुटीलटकनि
पीनपरचटकलटक चलिचाल चलवचित

मा॰चि॰ वनचोराचितालियोबिहारीलाल ५५ बार्ता इहां
५२ चितचोरनकोराजसोभ्रकुटीप्यादिदिखरीकीयो
नैचोरा ॥ अथबार्ताकेदोहा ॥ बारकेहीपंकसेकेमे
कमलतेकीयाअनेक ॥ बातचितेत्यावतेहसतप्र
छतबातविसेष ॥ ५६ ॥ बिहारी ॥ बतरसलालचला
लकेमुरलीधरीलुकाइ ॥ मोहनत्रासनिमुखनट
तिदेनकहेनाटिजाइ ॥ ५७ ॥ बार्तामुरलीलुकाइ
बेकेछलमोरलालकीबातैसुनकोइरसाध्यो
यातेइसारीपरजावोकिभीमासेहैअोनहाँ

कैसंगबकृतभावउपजैसोसमुझेइहांकरतामैकी
याएकसंगतेनहीउपजीयातेसमुझेनहीइह
तोजनबलालमुरलीमांगेहैतबभोंहसोंडरपावे
हैमुषसोंनटेहैं नवनायककोंजातदेषेहैतब
देनकहेहैं यामेंएकनायककोंअनेककीयाहैके
मतेहैयातेकारकहीपदकु पुनः कहतनरतरी
मताषिसतमिलतषिलतलाजेयात भयेमें
नमैंबरतहैनैननहीसबबात [illegible] बातीभरे
भौनमेंबातनकैरै यजातिवंदहैतवैसीकजम

भाषचि॰ योयातेतीसरीविभावनाभासैहैयामे१कैमेकी
५६ याभ्यनेकहैंयातेकारकदीपकजांनीयै अथ
समाधि सोसमाधिकाजसुगमभयोहेतकरि
होनउत्कंठितयाकेंभई॥यथा॥दिनउद्दोत ५६
बाती नाइकानेउपपतिपैजाइवेकोआरंभकी
योतबसंध्याभईसुगमभयो पुनः सखीमना
वतमांनतीनहींमांनतअबनथाय बोलउद्दीपि
कनिरासितुनिछुटेमांनअकुलाय २ वार्ता
अथअतदगुनलछि दुबदे॥अरिकैपसकेपतनी

मेरहभाइ इगनदवालेकंजतेचढेकोंनपरगाइ
दे१ वातो चलनवांनजोमथुनातोतीजोरचेले
नही नबसतनुके पसनकोंदुषदैनातहांप्रापनी
बलोंनीगये तेसेदुगननतहागिये जंजदगकेजे
पछीकोननापरचढेनेभरे पुन मानेरामनतो
मुषछाविसोहागि विधुमषे चलेकलमेत
सारदुंदु व्यतहाचिदमुषि मरावेदानिदुषदेत
जानौ हे अरवेदमुषीतेरमुषकोछवीलबुच
नवांनहे तालोतो चंद्रमाकोजोरनहीचले

भावक
१०

नवकमलन कौं दुषदेत हैं तेरे मुष के पदनी अथ
काव्यार्थापति काव्यार्थापति या की यो लिषते
सहइ हजान मुषजीतो व हरचंद्रमौं कहा कमल
की वात है २ अर्थ जिसने इह कीयो तो इह कित
नी वात है ऐसो जहां होइ तहां काव्यार्थापति
जिस मुष ने चंद्रमा कौ जीत्यो ता कौं कमल कौ
कहा वात है पुनः मेदिनी आपने इह देकौ निकस
तिहि कुच बोल मे दृति ओरानि कौ लीयो अच
रजन की विसाल है २ अथ काव्यलिंग काव्य

तिंगजहांजगतनैं अर्थसमर्थनहोइ तोऔरै
जीत्योमदनमोहियमैतिवम्रौय ॥६३॥ यामै स
मर्थनीयजो अर्थसमर्थदुष्करसोऔव्यालि
ग मदनकैंजीतवौंकठिनसोसमर्थनीयहैसा
कौंसमर्थनकीयोहमारेहदेमैसिवहैंजिननुमे
जरावयो ॥ यथा ॥ महाकामज्वालालनसमहत
हिहैंअवाप वाकेवदनापिदुष्रमैवहतारेहेत
ननाव ॥६४॥ अथअर्थांतर जोविसेषसामा
न्यदिढतौअर्थांतरन्यास रघुवरकेवागिरत

भा० वि०
६६

तरे बडे बैरेन कू हाल्प दूं है॥ यातें महां विसेष समर्थ
दिढ करबौ तो सामान्य ग्रथ तें षे द्विं या सामान्य
थंभ्बौ दिढ करबौ विसेष ताते श्रीरामचंद्रजी के
बलतेजल्लीनैं पहार तरे प्रस्तुत विषे ष अर्थ तरे
ताकौं पुष्ट करावे कौ ग्रथ बडे कहा न करे यह या
प्रस्तुत सामान्यार्थ दीयौ ॥ पुन॥ नीचे संग गुनी
नके चढत उच्च पद पाय फूलमान कै संग ते सूतो
सीस चढाइ ॥६॥ यातें गुनीन के संग नीच उच्च
पदवी कौं पावे यह प्रसिद्ध है ताकौं विसेष अर्थ तें

पुरबीओयोपुन: पीयमनतलचैहवोकठिनततनलचि
होनतिगार त्नाबकैरींगबांषिनबंदेबंदेवदासवा
र ६७ वाणी पीयकेमनतलचैहवोयहकठिनदे
तोकौपुरबीओयोपुन: वडेनहुजैगुननाचेनविर
रवडाईपाइ कनकधतूरेलीकहेगनहनोगठो
नजाइ ६८ वाणी इहांसांमान्यकोविसेलसो
रिढकौपो गग्याविकल्प विकल्प होतविसेष
जैसपुनिसांमान्यविसेष हरिगिरिधार्योसत
पुरषभारसहोज्योविसेष ६९ वाणी विसेषगर्व

भा॰ वि॰
टी॰

कौ सांमांन्य अर्थ तेपुरुष कह्यो पूरि सांमान्य कौ वि
सेष अर्थ ते पुरुष कौं नहां विकार चर ए कहरि तैसि
रध न्यो पह विसेष सतपुरष संतार मैं वडा को
र जनकै रहै यह सांमान्य ताकौं पुरुष कियो विसेष
या तसो ·अवेत ईसल नाग भार धरै है यह वि
सेष जो तक वहुत भालि इ न होइ सो विसेष जो
वहुत मासिद्ध होइ सो सांमान्य पुनः सुंदरता की
सी मत्तवचोलतवचन सुपेक गुन मेरे गुन
दवत है न्यो सासिमांह कलेके ...ती प्रर्थ

मैविसेषहैउत्तरध्येमेसांमांन्यहै॥ओप्रविसेषक
हो॥ ९ ॥ उन:मानतेमन मधुपमाहिमो॥ नंनम्योय
हस्यांमनतश्रीरीति ॥ रसं॥आपनोकोजलगतुमेना
तिसेवीति ॥ उन: भावीबडोसुपबलहैतजतिन
आपनोअंग ॥ रूप चंदधावतभए॥ सुनकैहरित
केसंग ॥ ७१ ॥ भाव: भावीकीसबलताविसेसम्म
सेजानोगे॥ अथप्रोढोक्ति॥ प्रोढोक्ति उतकर्ष
कोकारनहेतुहेतु ॥ जमुनातीरतमालतरतेरंवा
र॥ बसत ॥ ७२ ॥ भाती जो उतकर्षकोकारनहे ॥

भा॰टी॰ ६८

ताकौ कारन न बनै ता हां जो दोन्हि जोनी में रहे

जमुना के तट में तमाल की उपाजिवो त्यों मतो

कौ ॥ वहेत तमाल आपे त्यों म होत है ॥ महेतता

को हेत ठहरायो ॥ अलंकार रतनाकरे ॥ चंदन कुं

द कपर हुलहत न ताकी होर कहा सें भुकोलो

सको कहा लतु वकु चमो ॥ २७८ ॥ वानी कैलो

लकौ रहिवो सें भूकी गोरई कौ हेत नही ताको

हेत ठहरायो ॥ मतिराम ॥ गंग नीर विघुर चिर

लवरु महइमु लख्यान उरोत कनक भवन केदी

वलौंजगमगातितुवजोति ७ पुनाती गंगनीरमै
मतिदिं वसेतकौउञारननहीं ताकौहेतठहरावै
थ्यैसैकनकभौनकीजोनी ८ अथसंभावना
होजौ यौजोहोततौसंभावनाविचारि वकतो
होतौसेसजौलहतौतुवगुनपार ९ ईखौनौ जहां
थ्यैसौतरक्कैरजौसेषवकताहोतौ तौगुनकौं
पारपावतौ नहां संभावनाजौनी १० पुनाविहा
री जौवाकैतनकीहसादेष्यौं चाहततौआप
तौचालिसैं ञविनौकौ ११ चालिजचंकेचुपचाप

भावरि० ६४ ७७ प्रथमकथौंति मिथ्याध्यवसानिझूंठहै वो
झूंठहरीति करैजु मालानभगुमन करैनगहती
यथीति ७८ यातैं ऐसजं जो सिद्ध कीलौगैं इस
रिझूंठकै है सो मिथ्याध्यसति नगर नारि कौं बी
तिकरनौ झूंठ ताकी सिद्ध केलीगै नमगुमनकी
मालाझूंठ गौ जहां जहां उदाहरन है करमें पारद
जौरहै तौ करै नवौ नाडी तितहां मौनवौ ज्ञौ गी
तिझूंठ ताकी सिद्धकेलीगौ करमें पारद तो झूंठ
मतिराम वलवचननकी मधुरत चबीलांपानि

जश्रोन रोमरोमपुलकित भरे चहत बउधग
हिमौन ॥ श्री ॥ वार्ता बलचचननश्रीमधुरनाथ
ठ ताकेहितकेलीगैसेंसांप श्रान म्पादि ते लवंग
ठ ॥ अथललित ल्यालित कह्योकछु चाहीगै
ताहिकौबरनत ॥ विंब सेतचांधिकार है कहौगै
गै वत्तूउतरोंध ॥ ६० ॥ वार्ता वस्तुतबोईवचन
कह्योचाहीगै ताईकौं छोडवेवालौबतति वि
कहेहो क्रौईरचनातरकैत तहांललितगत
धारजोंनीगैचालहंतरिता मायकानायक

भागवि० ९ क्रोमनावनेकोसखीपठवैंहैं नहांसखीकी उक्ति
६९ नक्रमनाइवेको ॥ ग्राया यो। नवेन ॥ ग्रमनादरकीया
अस्तुतनाऽस्कातासोंइहवातनहीकीयोहेतोहि
कीछायालकेभ्रहीं ॥ जगस्तुतवातपानीउतर
गयोपाछेतूबांधवांधकैकहावरैगी पुनर
निरंम केतोलीघातिधनसाविमासोंउठातिरि
साय सोयोचाहतिनींदभरिसेज ॥ ग्रगारवि
छाय ५९ बातीमेरीसीसनहीमिषेनुवहतनु
कौहाहेइमोर। ग्रदिनकलनहीयेरंगीताकीछया

ग्य गलितइ सरी वातकही सोयो चाहत इत्यादि
अथ चरनमेरा तीनि मह बैन जतनावैनवां
छितफलजो होइ वांछित इति अधिक फल उ
मावैनलहीगवेसोइ २४ सोधात जाके जतन
कौवस्तु चाहै ग्रासोय जाकौं चित चाहत होगा
ई इती सोय २३ नातौ जाकौं मिलन कौ उत्कंठा
थी सो जीया इतौ चनि आई जतनावै नाम नवां
छिनकौ सिद्धि भई या नगयम पुनः विराती अं
तैबतीसरपटपरी विधु गाध मगहेर मीद्व

भावचि० ६६

रैभौरनुलईभागनगलीग्रघेर ८३ भ्रमुरैरीभौ
ग्यारसीभ्रातिविंवातिषीयपाइ षीतिदउँतिद
एषेलधेभ्रकाटकदीठिलगाइ ८४ जष्वा दीपकं
कोंउद्यमकरांजोतोउद्यपोंभोन थातो धोरे
गकालवांछितथ्योभोन्तउहैभयोवहुतभ्राम
ग्याधिकफलभयो पुन: मतिराम वाहनसतपा
वतसहसगजपावतहैंचाहि भावसिंघएदान
मैंजगतसराहतताहि ८५ थातो चाहतगजपा
वतगजइत्यादिजांनीज्जै ॥ अथ तीसरी निधि

॥ जेजनश्रीगुरुकोबदीसोघातलघेनिदान ॥ दोहा
॥ इष्टवस्तुकेगात्रिकेउपाइकैसोघातमेंइष्टव
स्तुमिलैंतहतीमरीगहथैननिधि॥ जेजनश्रीगुरुको
ध्यैहैसोघातमेंनिधिमिली पुत्रमातिराम हरि
कीसुधिश्रीराधिकाचली॥ वरकेलेभौन हसतवी
बहीमिलिगरेवरानिसकेसुखकौन ॥ दो॥ वार्ता
हरिकीवहिसुधिमिलैंतहांहोजाउसोहरिवीव
हीमिलैतैहसुखकौनवरनै ॥ अथविषाद को
विषादचितचाहतेउलटोकष्टहैजाइ नीची

भा० वि०) यासतप्रुति परी चरनायुधधुनेंआइ । हरषी
दी० ७ नी नाइकनाइकाते राति मैसंजोग चाहै हैं तवहु
धुरकी धुनि सुनि ग्यानभयौ ग्यानसमै राति वीजै
नहैं याते चितकौ चाहतजलटौभयौ याते दिवा
६ विहारी राति ध्योस होस रहै सोमनु नादिरवृहर
राइ जैतौंअवगुन कहीं गुनहाथपरिनाइ
२ दै नातौ अवगुनकौ चाहसौ गुनआप्रजुलटैं
१२ अथावास गुनअवगुनजवरैवृतेआरफ़ौरे
उद्गास हाइसनपावनकैरंगमधरैरहैगास

दे० वार्ता जहां एक के गुन दोष के और को गुन दो
ष कहत हैं सो उल्लास एक के गुन ते और को गुन
एक के दोष ते और को गुन एक के गुन ते और
को दोष ऐसे चारि तरह उल्लास जानीऐ गुन
ते गुन जथा संतन की महिमा गुन ता ते गंगा की
पवित्रता गुन । अथ दोष ते गुन लाभ बडी जो
कुसर तें सेवक निज घर जाइ वार्ता २ होरा जो बी
कुता दोष ता तें सेवक को बंधन विना कुमत ले
घर जो न्यों । अथ गुन ते दोष हेम भाग धन को

भोग० ९९

वडेसेवतसंतननाइ ९२ बानी संतनकीमहिमा

गुनधनकीअसेवनोहोय अयसेअतेहोय

करेकठिनकुचवेनाहितमरतुतचरनधार निंद

निहेभाजनसबेविधिकोनुअभ्यासनारि ९२ बानी

इहांराजाकेडरनेभागिवेमेंअरिनारिनकेचरनको

मलहेंइहांववनालिवनावनताविधानकोहा

बवन्यो अथगुननतेगुन सब्बासंगअयातरस

नरमननभलेनलोल हेषतहीबकुलीनमयो

चित्रहमारोवाल ९३ बानीइहांनंदलालकी

प्रसन्नतागुनतामैंनाइककोचित्रप्रसन्नता
गुन भनितोसे दहीछौनमोहनलीयोसषी
लषमषनठौर वडौभाग मनमैगन्यौंजोनरी
षौकछुग्वैर २४ बातो रहानाइककौहती
छीनलैनाहोषतातोनाइकवीधर्मरहमगन
विरली भरिफुलेलकौंन्याचमननमींवौंकहत
सतहि गंधीगंधगुलावकौंअतरादिषाव
नकाहि भातोषेसे गुनतेहोष गोरसवैहर
छीपिगावातिभरीउझार नदकुफिलांनीषी

भा० टि०
६६

बहुलाबिदेबाकौ ब्याह ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ तेहि रचे र
नवनन को जो हौ होय कै बै बिनास ॥ आपुन मे मि
लि कै कहूं आगि उडहि बास ॥ ६७ ॥ याको अर्थ ॥ जा
हीतें अब अपार कौ लगे न गुन अरु दोस ॥ पर
सिबुधा बरा बिहि तितें पुलेन यहै जे अरोस ॥ ६८ ॥
वार्ता ॥ काहू के गुनन तें काहू आहू नाहीं ॥ काहू के दो
ष ते काहू कौ हो घनहीं ॥ जैसे इहां चंद्रमा के गुन
ते कमलन कौ गुन न भयौ ॥ पुनः ॥ सौ दिष मे दूष
न नहीं ॥ गयो नेन उलक जगत प्रकास भान कौ

कहा कहों वे वृक्ष ९९ वार्ता १ होउ लूक झीगं पाता
देखतेमूर्यवेक्रोदोषनभयो १ नमानेराम पेरहू
वादिरूथ्यांचरावतवादिगवाहा उदेतमैभुरले ने
हकौनेउरउपरमाह १०० वार्ता १ हांमेधवेगु
नतेउरकौंगुननभयो विहारी सीतलतादगु
गंधक्रोंछटोनमाहि मांमूर पीनसकारज्योतजो
पेराजोनिकूपर १ वार्ता १ हां पीनलयारवेदो
षलोवकुरकौंदोषनभयो १ मधरगनुंसोल:
होतनचन्द्रजाजोचहेदोवाहि कौंगुनमानि है

भावचिव २ बिपतिनाभैंसदाहीसोचदततहरिभ्रानै मधु
७० नौ बिपतिमैंहरिकौसमारनबोहैनहोतहैयाते
बिपतिदोषनाहिं औगुनकोरवाह्यो गुनविहारी
नौनअजुगतिः यातैं प्यारेकौमिलनकौतेपना
औगुनचाह्यो अथअनेल गुनकौदोषकहदोष
औगुनवरनैतहोलेस सुकहतमधुरीबांनीतेव
धनलह्योविलेस ३ यातैं मधुरीवचननौ
मोहोसबठहराषोतपवबांधोगयौ पुनः तपक
बकैफलनकौलेनसवादमधुचाष विनयाक्रम

धुरी बानि तोनि धरवकडोलनखाव ४ बानी वडु
बोनी होय ताहि मैं गुन मान्यो मतिराम कतसर
नी कै घन मनो गमु वाम रति संग बडे भागन
रलोलकै संडह लगनबलंछ ५ बानी कलेको
घतालो गुन मान्यो अथ मुद्रा मुद्रा वरनत पदवि
षे औरै निकरै नाम तो हि मनावन को कहे मोति
ने होला स्याम बानी ६ हा यसनु तो भाइ कोकेवनि
नमैं रोहल कौ गयर्यदो ६ हहां क्या कहरै लै चोदाह
छैदयो पानानि कल्यो पुनः विहारी कितलपदे०

भा॰ वि॰ ७ पुनः नरहनि पीडो मे सुनी गोवा मो हिन मुलार नै
७२ नसरे गाढ्करहें कैं नाविसारे जाइ ८ वार्ता नारहन
कौ ग्रंथ नहीं रहनौ गोगवा गयो सरेला ग्रंथा वेसैन
ग्यो नरहनि गोवा हिंदसहे ग्रंथमदेसा दिकवेदगो
है तामे मुष्टालंकार होत है इहां बनी वनै कौ ग्रंथा
य नहीं पाने मुष्टा जहां बनी वनै कौ ग्रंथा भूपतीइ
लोथ्रिम ग्रंथ रत्नावली रतनावालि मसुतं ग्र
रथ क्रमते ग्रौर नाम रसिक चतुर मुष लहि
ग्योनकैं पनि सकल धाम ९ वार्ता जहां ग्रंथ कौ मसहं

रहै न हां क्रम सौं ऋोर कै नाम निकरै सो रतनावली
इहां वसुराजा के वनन में प्रसिद्ध क्रम हीं लैं चतुर्भु
ज हां त्रिलोक छमी पावनित बिमु सोन कौ धाम सिव
नो नौमै पुन: सांच जुधिष्ठर कौं लख्यो भीम
सैन कौं जोर विजै विजै कौं तां हिमें ध-यो विद्या
तो चोर २० वार्ता इहां राजा केव वनमें क्रम हीसो
युधीष्ठर भीम विजै अर्जुन कौं नाम राख्यो पुन
रवि तेरतेजा हि करतु सोम सील कौ देत मंगल म
गल वुद्ध निबुध भय पर चमत्कार हैन ११ वार्ता

घतकुरग नकुरगताजिगुरग॰आपनौसंगलिकोगुन
लेइ वेसरमौतीग्रधरमिलिपद्मरागछविदेइ
१२ वानी वेसकोमोंतीस्वितन छोडकेगधारको
गुनअहनताजीनी पुन: देपातिवैठकुंजमेपरे
जुग्गेगडहोत राधामालेसांमरीमोहनगोरे
होत १३ वानी नाइकोनेअपनोगुनछोडिपुले
लेकेगुनलीए ॥ अथपवैरुप॰अलंकार पूर्वरुपले
संगगुनताजिपुनिअपनोलेत इजैजोगुननामि
टैहीगेत्रैमिटनवैहेत १५ लसलप्यामेमोसिन्वा

नसतेउजलहोत दीपमिराएरहीयोरसनामन
उदोत २६ बातो सेजचेतहेसामिकेमातीविंघते
स्यामभयोपुरजसनोमिलउजलभयोस्यामगात
ने॥आपनोगुनतीयोखर्थउसरोदीपमिरा॥गेहमा
सतबगुननमिटो॥अवानिय बदनचंदकीचांदनी
देहदीपकीजोति पालिविनेहलालवालेमवनरा
जिसोहोति २७ ॥बछानामकुल मुखनगुनगुनगुन
नागहेसंगलिकोजिहिछांहे दीपगनुरागीनामारे
बंसिरागीमनमाहि २८ बातो मनरंगिनहेजोर

भा॰ वि॰ नके संग मै रहत है सो रंगीन होत है इसका नाइक मन ते मे
७३ बसन हे तो बीरंगीन पयन भयो मन को रंग न ही लगे
बिहारी येरी यह तेरी दई १९ अथ अवगुन लछन
अन गुन संगति ते जबै पूरब गुन सरसाइ मुकतमा
ल हीय हांस ने आधिक स्वेत के जाइ २० वार्ता मु
कता आप स्वेत है हांस के प्रकास ने आधिक स्वेत भए
अथ मीलित मीलित जब साद्रस्य तें भेद न बैन
लखाइ अरुन बरन तीय चरन मैं जावक लख्यो न
जाइ २१ वार्ता इहां चरन ने ललाई को औ महावर

कौ समता है तातै भेद नहीं भासै यातै मीलित जानि
विरती न तैवाल ॥ अनुरागता ॥ ० २२ ॥ अथ सामान्य
सामान्य जु साइ स्यते जानी परै विसेष नाहिं फुरत
श्रुति कमल ॥ अस्तुती पलोचन अनिमेष २३ ॥ वार्ता
तो पलोचन ॥ अनिमेष मैं ॥ सो श्रुति कमल जो है तिनमें
भेद नहीं फुरै नहीं दुसता पदार्थ जु दुहन भासै नहीं
मिलत होत है ॥ सो सामान्य मैं पदार्थ भिन्न भिन्न भा
सै है पै भेदक धर्म नहीं भासै है ॥ पै सुजानी ॥ ३ ॥ अ
थ उन्मीलित ॥ उन्मीलित तथा इस्पत भेद फुरै तब सा

भा॰वि॰
७४

न कीरीति॰अंगनजुहि नागिदिखुरेपरतहैजोन २४
बाती दीपपदार्थ भिन्नाभिन्नजाति यहहोतिहै सो
मिलगईहोइ तामैकोईइनर भेदकुरैसोउन्मीलित
जोनीभे कोनि॰घोराहिमावनघिभिन्नाभिन्नजातहै
ताकौअपसर्वपीवे रूपाभयो मीलतिकेविषैतउन्मी
लितजांन्योजाइ विशेषा विलिवंदनवेदी॰गंध २५
विशेष पहैविनविविशेषकछुकुरैजुसमतानाहि ति
यमुखगहपंकजलमैमासिवरसननैमाहि ॰दं न
ती सवतामैजहाविशेषकहैतहाविशेषमलंकारहै

नायका कौ मुख संयोत्र कमल समा भासत है तेचंद्र समनते
सौ सवे देखे जांनी परत है यहै तीयमुखे है पहले कमलते
जो लसुवितहै से मांन भ्य संकार के विषे मे विसेषो
लंकार जांनीये ॥ अथ गूढोत्तर ॥ गूढोत्तर कौ धुमा
वन उत्तर दीनो होत उनवे लनत है मे बहा उत्तर सेय
प्रसेत २७ ॥ यथा ॥ नहां कहु ना ब ते उत्तर दिजे सोग
ढोत्तर जैसे कोउ पथिक उतरने लाइक नही को घार
इच्छो तहां नाइका ने उत्तर दीयो त्रवतसके नदेघार
उतरिवे लाइक है तहां उतरो या को संग भावार्थ है

ना॰ चि॰ ७४ द्वि॰ उहां निर्जन असथान है निस बिहार कौ लोग पुन॰
या पहार के गांम मे मिलै नहीं ॥ वघु ध्यान उत्तर दे
खि ब पयोधर न बसी गेह स्याम सुजान ॥ २८ ॥ पान
पयोधर मे छाके नांम है ॥ ओकु च कौ जांनीये ॥ ष
थी चित्रालंकार चित्र प्रश्न उत्तर जहां प्रश्न वचन मे सो
प मुष्यांनी यक की केलह छि गेह कौन मै हो ॥ २९ ॥ पा
ती गेह कौन मै है ॥ यही प्रश्न यही उत्तर ॥ गपांत
रे जहां है बस्त जगत बक कौ उत्तर २ वक मुचित्र पोन
प्रकार लहै जगत कौ नदिषंत सघा मित्र ॥ ३० ॥ पानी

रहोमित्रमेंहितसोंननेहभगईहोपित्रनोममरजैद्रोगवोर
सनेहाकोइकहेतनिहै ॥ अथलक्षन सुक्षमपरगास
पत्येमैंकैरेकीयाकछुभाइ मेदेख्योउनसीसमनि
केसनलईछपाइ ३२ वार्ता वाकेमनकीगतना
रवीजोंनगईतबनोइकेसी ॥ अभिप्राय सहतचेष्टा
करीमानिकेसननमैछपाईहमारोतुमरोमिलापर
सर्ये ॥ अलसमैमेहोइगोइहजनायो ॥ अथपिहित
पिहितछपावपरवातकौंजोंनाविनावेभाव आतहि
आएसेजतीपहासिदावतिसीपपांव ३३ वार्ता

भावनि इहां गर पराई बात कौ जो न चेष्टा करै सनहां पारि लैग
७६ ने कारजो नो ॥ अथ व्याजोक्ति ॥ व्याजोक्ति कछु और
विध कहे दुरै आकार ॥ लषी अंगुरीन हेम मैं ॥ सेन विदा
र यमनि हेरु ॥ ३३ ॥ वार्ता ॥ इहां नाइकानै लषी सोन
ष छलन छपा ये वो अनुकरिवेकौ याठहराई छिकापन जुति
बचन छपाय नाहीं वहे इहां आकार छपायो जा
ते व्याजोक्ति ॥ विवृति ॥ आरचन ने डरावने ॥ ३४ ॥ वार्ता
॥ औरन रैहि कहि हो मैं पासा लाल कडरापो ॥ अथ गूढो
क्ति ॥ प्रगना क्रिमि मग ॥ गोरक्षकेकौ जेपर उपदेश आनि

सखीमेंनांउग्रीपूजनदेसमहेस ३५ वार्ता जोवा
तऔरदेकरवेन्हीहारसांगोरषोंवे सोगरतोद्वि
षलेखारहे नाइकतेचहिवचौ वातसोलषीते
हीनापवसोंसुनावे अथपरिक्रमातिद्वि लेषप
पोपरगट श्रीवेद्रवोद्धिहेवेन रूपभाजोपरिषेत
सौंकहितवतायोलेन ३६ वार्ता रूपभानांमवेल
कौहेरूपमनांमजारकौहेचेननांमषेतकोहेवेत
नांमरखीदेमीहैसलेषकोवातहिपिहैकवीने
संगदसीयासेनवताइकेकहतहे अथ [illegible]

भा०चि० ७८

जन्नि कीया करि ठौरे ग्वानि ममंछेपे नहीं जानि सिष
तचि त्रपीय कौ तिव्यो कुल धनुष दीयपानि ३७
वातौ ममंगुपत रातको कुहे हे वात छपाइ वक्की गैव
कीपा वोई क्रै रे गोर ठेग नहां जुन्कि लंका रहे कुलध
नुषलै वे क्री कीया करि देष न वा तिंत्रे ममउपज
वौ पुरषकौं प्रगूठा षनुरग घी पायो । नैरी
ललन चलन सुनि वलन० ३८ वानी जभाई की
कीया करी लषीको निंदति आरसको ममउपजा
यौ षषकौ लौति तोकौ त्रिकछ वचन जोली

मैलोकृ प्रवाद नैन भुदेष्टमांस्लोल हीठैविर

ह विषाद ३९ वानी इहलोकमेकहावतहैषां

षिमूं दृश्ठेसरिग्राहु विजारी तुरनसुरन ४० वानी

डोडीमे रहलोकौनकै अथ छेकौनकि छेकोनिवध

अर्थसो छे जोकतिहै जोनि सखिगुजनकेचनको

लषत गुंजगाहिमोन ४१ बानी सोपद्रेपामसो

पहीजोनेयहलोकौकि तहांप्रपसौंगुंजननो

मकामीको भीहै यातेकामीकी गतिकामीजाने

भी यवहकौनिवकौकिसपरश्लेससौं अर्थाभीजह

भावचि० होइ रसिकन्ह पूर्वहीवीयावुरो कहतनही होइ ४२
७८ पुनःजथोनरे सेषकोम्रयन्ह दुहु नकेरंगमथ्रीकल्य
नाहोय वक्तोकितन्हहांकहतहे काविकोविदनव
होइ ४३ जथा जुवतिनके गनमेसनेहरनोमा
वतहोतिं कहाकहतहेरीसषीभारमहगनकहु
होति ४४ चौ॰ जहांकोईवानस्वरूपेदरसौवि
वासलेइसो॰ श्रौरहीअर्थधरिवेतहांवक्तोक्ति
अलंकारजानोग्रवे इहांपहलेंउदाहरनमेंस
षीकीउक्तिमोनवनीसोतेरोपीयगयकाकेसो

॥ अथ समासोक्ति ॥ समासोक्ति जहां जां नीग ये बरने
जानि सुभाइ हसि हासि देषति फिरि रहत ति मुह
मोरति सतराइ ४५ वार्ता जहां जाति गुन की
या को बरनन करै जहां समासोक्ति अलंकार होत
है विहारी डोरी लाई सुनन की ४६ पुनः फगुवा
हारहि ऐसे ही ॥०॥ ४७ ॥ अथ भाविक भाविक भु
त विषै बात षहेत बनाय वृंदावन मे आज
नंदहि सिलाबो देजाय ४८ वार्ता भूत जे बीते
हैं पुनि जो भविष्य जो आगे होइगो सो जहां प्रतछ

पा०चि० होय सो भविष्यलंकार कीवैं दावनमे ऽऐसे सरमौत
७६ यऽअसंधानहै जो लीलाऽअगै भई है सोऽआज रे
दीजात है कि वा जोऽअगै होइगी होनहार सो प्रत
छ है । विहारी योहलमलौयत० ४६ वार्ता जोध
र धरा तुरत ऽआरंभमैं मयो है सोऽअब है ऽअलंकार
तलक्षन हेउ दान संपति वार इति श्रीभाष्य चरित्र प्रसं
ग संगरी सिव अर्जुन कीयो याके सिखरऽअभंग
४० वार्ता वड़ी संपति के चरित्र को वर्नन करै है कि
ता ऐसें जो सतुति करने लायक है ताकी कृपाऽऔर

कौ लेग होत न तहां उदात ॥ अलंकार है ॥ इहां प्रवीन के व
नैन मै ॥ अश्लेष ॥ अथ अद्भुतालंकार ॥ अद्भुत जू ही
बात जहां वर्नै भांति समयह पजा चक्कले दान ते
म ऐ कल्यतरुमूप ५१ पुनः ॥ अद्भुत जू हो वात ज
हां वरनै बहुत बनाय ॥ दान सुरन आदि दै असु
र कुविदाय ५२ वानी जहां अद्भुत औ जू ही बा
त ॥ आधिक्य और वनै सरनो उदारता मेल हां ॥ अत्युति
॥ अलंकार है ॥ इहै राजन ते रहां न ते जाचक कल्पत
रु भए एहु ॥ अद्भुत सुवात है ॥ इहां दान की आधिकता

ना०चिं० ७ चितरी ॥ ज्यौं धाई सीसी ॥ ५७ ॥ अथ नीत कल्पना
८० होति ताकै नव जोग सौं ॥ अर्थ कल्पना ॥ ज्यौं न ऊधौ
कुविजा न समरै निर्गुन बहे लि दीन ५८ ॥ बानी
जहां जोग सौ ॥ अर्थ ॥ कौ ॥ और ॥ अर्थ कैरेय ह्र जोनी
कौ निर्गुन की कल्पता मै सत्व रज रै गुन न होइ हां
निर्गुन कौ ॥ अर्थ कीयो जाकौ ह्र पनी सगुन कौ परी
क्षा न होइ अब तौ नी देखो कुविजा मै कौंन बात सौं
असंनै भरै ॥ अथ प्रतिषेध लछन ॥ सो प्रतिषेध प्रसि
द्ध जे हां ॥ अर्थ पानि बेध्यो जाइ ॥ नीक्षन बानन बिनौ

है नहीं जुवार हहर्ड युवानी न होए कुमसिद्ध कुहो
कौं निषेध धरे सब जांनत हैं ताकौ जो निषेध करनो तो
निषेध असिद्धनि कौं मांही इक्षे और अर्थ भासत है
प्रतिषेधालंकार जांनोग्ये दृष्ट जुवानी जुद्ध होजुवारी
जुद्ध कौ निवारी करी है ना सो इहन वैनरकी डाके जुद्धतो
जुवांनी ही है यह बात सब जांनत है यह जुवांनी जुद्ध
है यह प्रसिद्ध सौं निषेध जानु पजु कौ होइ मै और अर्थ
मैं जाइ चमत्कार पायो जुवांनै जु मारो जोर बतुराई पु
लै न्यारे मैं नहीं यह और अर्थ तेहां चमत्कार पायो

५५

माल्ति० ॥अथ अविवेक अलंकार ॥ अलंकार विधि तिह जो अथ
२१ साधी ॥ अर्थ कोकिल तै हंस कै न बिगनु मै नहि कै टेर
॥ ६ ॥ जौ नैं हां कोकिल तो पिके हैं ताको हंस लोप
यथा दूसरो कोकिल मधुर ध्वनि कहो ॥ अथ अनु
अलंकार लछन ॥ जहां कारज कारन संग कारज कार
न एक ज्ञैल हानि हैं ताग गंग ॥ ७ ॥ बानी कारज को
रन के संग चान कि क्रिया का जैकार न एक ताको पाउ
होय ॥ यथा ॥ नभयो मान नी मनमानि टाकुन
कौन मैरे रिदस रहि पहन तै ति हृ पाव धान ॥ ८ ॥

याते चंद्रउदय काजे मान छूटनो कानि जानी गई श्री
राधा कस जीतकृपा कानि रिधि सम्रिद्धि काजे ताकी
एकता करी कृपाई रिद्धि समृद्धि है याते हेतु लंकार
पुनः विकारे हेतु लवै वैरी दो० ५६ याते तोय
केवलताते मैं वैं ही दै यो कानि उद्दोतन छूटनो काजे मो
साप ही वर दीयो याते प्रथम हेतु पुनः कोउ कौरि
दो० याते जदुपति संपाति कौ कारन है संपाति काजे
ताकी एकता करी इतौ भाजभूषन [illegible] लंकार भी
प्राप्रब नमैन [illegible] लंकार है ५८ ते परब लीर काव

भाग लिए
९८

कहत है देवबलंल कौनपाठ ॥ १ ॥ अथ सनकसलंकार
प्रत्यं स सुमन रंद मिलितालों उपजे तांन पीठ दीप्ते
तन भारली मोद निहारतिकोंन ॥ २ ॥ वार्ता इहां ने
सो वत्य दुर्जानों है विहारी कुंजनेनमंजुलकी
पे ॥ ३ ॥ वार्ता इहां भीनेत्रनसों वत्य स्वमवो है मेप
जी या त्रि भासेहे पुन: गली गवरी कुंज मे ॥ ४
वार्ता इहां न नसो गत्य समयो पुन: सुरतिनता
लननोनकी ॥ ५ ॥ इहां श्रवनसो वत्य समयो अथ
अनुमांन अनुमांन जो हेतु तें होत साध्य को ज्ञान

सलिलवदनी ऐसैं वस्तीजांनी प्रत्यक्षप्रमांन ॥१॥ वार्ता
तुमारे॰ अंगनमैं सुभाग गई है है सो हेतु है गंगाको निश्चौ की
ये तो लाध्य देह मैं सलिलवदनी कौं भ्यास सलाध्य उत्तेयथा
मैं निश्चै नहीं॰ अनुमांन मैं पदार्थ मैं निश्चै होत है अ
होवै चहैं ॥ उपमांन ते नहीं॰ आदि कौ हेतु तहां जांन
लैन॰ अनुमांन ॥ अन्य त्र अनुमांन को लक्षण धौ लक्षर
जांन ॥२॥ अथ उपमांन उपमांन कुसाद्रस्यतें अ
न देख्यो लखि जाइ नाम रूप पाछैं तातार कांध्यो लक्षा
न लषांपै ॥३॥ यथा जो की बांनी मैं मि लै को किल

भा॰वि॰ खर अनुहारि मुख है अकृत इंदु को सो रख भांन

८३ कुमारि ७०॥ वार्ता वेस ई है अथ तदा लंकारल॰

सब्द सु सुनिके बचन जहां वचन वेद पर घांन वि

नकैठी हरि भगति नहि लहै नगु रवि नग पांन ७१

वार्ता इहां वेद पुरान प्रमांन है अथ ॰अर्थापत्ति

जहां अर्थ कै आधी है और अर्थ लहीय देवदेन मो

दो रहै दिन मैं अधु न ल भार ७२ वार्ता दिन मै नही

खाइ सो मो मोर है हैं यह अर्थ घाति इहां इहै रात्री

मैं भोजन करत है इह अर्थ कहि हराइ रात्री मैं न खाते

तौमोटोनहीरहतो पुनःबिहारी कैहतवेकविक्रम
तसे० ७३ वार्ता बिरहहृदयश्यामेउपजाइयोति
हकरकेनेत्रपाछानदहरारेइहांश्रोरश्रलंकार
भीहैतोभीचमत्कारअर्थापत्तिहीसोंहै श्रपक
इत नहींजानेंजिनकीबहीचालिश्रावेजोपान
वकोसपथमनजांनींगैनहांआइनविख्यात ७४
पुनःविहारी नकहनडहलवजगरे ७५ वार्तानव
लनडहत्याकेसपथमवक्रानहींजांनींसातसवतीके
रलोकेंकिनहीं ग्यफ्यनुमानवनाहीं जहांस्वभाव

भा॰वि॰

८४

केउपांनहोतविसेषलुसांन ॰अनुपत्यआछितले
सोंकीगैंघर्नेतलवैसयांन ७६ यथा मोहनके
वसकरनकौंतोमैंनाहिंलहांन सवालहेलीलाकी
नाहिवेरनहींजांन ७७ बानी वसकरवेकोसांन
थाकौं॰अभासहैसोहोतोतोंजानवेमैं आवतो अ
थासवत॰अलंकार रसवतजहांतिभावकोहोइ
शृंगारल॰आ विलसतनहींजो॰अंगलागेनेहनहीं
नलोजाइ ७८ बानी कोईस्त्रीसेरेस विलापक
रैहनेहवांसीजोनायकातासोंदेषवेमैंनहीं॰आवे

ई श्रृंगारकौ सम्मेलन कै रहै है श्रृंगारकौ कहन कौ विरो
ध है तैसैही जहां सम्मरन है तहां दोषन हीं श्रृंगार
हैं तैसे समबधान इहां कहत ना समधान है ताकौ श्रृं
गार श्रृंगमयो पुन: रूपमुंदरमानिरांमकौ चंद
न है सुखपाइ ॥ घोकालकौ हुजत नै दीनौ सुरत
निवाय ७८ बानो रूपसुंदरमानिक रूपीराव
चंदनानौ किं बाई स्वर इहांराजविषै ईस्वरविषै
गुरुविषै देवताविषै रति होइ तहां भाव कहिए है
क हानि दै पनसभात्रै कामी नै नैकी नतरकौ यो है गो

भा०वि०
८५

इहां रतिभावकौं अद्भुतरस अंग भयो ॥ अथ
वत्सला यथा वत्सलरसभावकौ होइ भावजो अंग
रांम रटत कुव ॥ अब बाधि मैं प्रीते संतन के संग ॥
वार्ता इहां संतरसमैं चिंतना संचारी भाव अंग भयो
॥ अथ ॥ धरत विस्व कौं उदरमैं करत असुर कौ नास
ऐसे श्री भगवांन मैं वसौ चित्र सहुलास ॥ ८१
वार्ता इहां वीररसकौं रतिभाव अंग भयो ॥ अथ
उर्जस्वित ॥ उरजस्वित रसभावकौं अंग गुरु कं नामास
न्यपतु वैरी नीयत मैं भी तरमत सहुलास ॥ ८२

वातो भाव मैर लैसे ।१। आभास यांको मरयाद सभाव
क्रिया भाव भास नीचकी रति उत्तमावि षैसो छ
गार कौ रसाभास मावे हे सो राजा विषयक जो रति
ताक्कौ श्रृंगार भयौ ।२। अथ भावाभास रसाभास अ
नुचित क्कैरे पिता पुत्र मो रति हसी कौ गुरदेव
कौ रसै अगम्या नारि ॥२३॥ जहां अनुचित होइ
तहां रसाभास ।१। अथ भावाभास सब कुल तो तन
तु की वेस्यादिक्कै मे साज भावाभास कौ ये बैल व
सैसो तिहि गुन छन राजै ॥२४॥ वातो जहां सनुत

भा॰वि॰ ९ जुक्ति सुनिकै देवस्यादिक मैं लीजै होइ तहां भावा
२१ भास ॥ अथ भाव समाहित ॥ भाव सांति रस भाव कौ
॥ अंग समाहित तोंन गर्बिन ज्योतलज्जु नरहै
तुवकरदृष्टि ॥ पांन २५ बातो रसकौ भावकौ
॥ अंग जो भाव सांत होइ तहां समाहित जांनीजै इ
हां गर्ब संचारी कौ सांति सो राजरति भाव कौ अंग
भयो ॥ अथ भावोदय ॥ जहां भाव कौ उदय सुनि
है भावोदय कविता सों कहै ॥ अथ भाव सबलि
किरिति विलयो लौलति पिरि तिनासे

सुंदरि रवच सेतलौं बीत्यो चुननकवास ८७ बातौ
रहौ विधार से चारिकै उदे जानीगै भाव[illegible]
धि जहां भावकी संधि जु है भाव संधि सवताको
कहै बातौ लछनाम ब्रापसमेतल ० नउदाहरन वढ़
नहे विलाति पीयविछुरनकौ दुसह दुष: ८८
बातौ इहां विआदहर्षविहंन भावको संधिहै अथ
भावसाबल्य दावतभावहि भावजो उपजैवरत
इकअंग [illegible] भावसाबल्य तिन्ह कवि सुमति
सांगि [illegible] नहीं [illegible] भावसदवा

भा०वि०१ वैदुसरा भाव उपजैं सो भाव रसावस्थ विलति व
६७ लसंचारी सो तिकै० ६०। इति श्री भावविलासे [illegible] ग्रंथस
वदालंकार काव्यरीतिल। गौडी वैदर्भी कहैं पंचाली
पुनजांनि लाटी ओजप्रसाद पुनि माधुर्ज हि श्री
यानि ९२ बानी इन चार रीतिन में ओजप्रसाद
माधुर्ज गुन उपजै है भारतमुनि के मत में ध्वन
काव्य कौं आतम है ।गो वांमन के मत में ये चारो री
ति आतम मांनत है ।अथ गौडी रीति जोगीवर
न जहां होइ सु वडो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

गोडीकोंवास ॥ १ ॥ वाणी टवर्ग के वर्न होइ ॥ बोलें जो
गीवरन होइ इस्थूलताको परगुरहो ॥ २ ॥ वडो समोस होय
॥ येला छुहवंदर तैसौ [illegible] तहां गोडी होत है ॥ ३ ॥ परवा
विती [illegible] है सो गोडी के अंतरभूत है ॥ ४ ॥ [illegible]
पाल जो सौ कौ करि लेइ ते को मे यौ नही
होइ ॥ ५ ॥ आके अर्थ मैं लहि समोस है सो ई ॥ ६ ॥
वाती जो सो [illegible] इत्यादिक समह मैं न होइ अर्थे कर
तैमैं भिन्न [illegible] समास है विकारी सो [illegible] वो ठैनो
[illegible] ज [illegible] सो [illegible] ठेलेनै कोगातेहै

भा॰टि॰
८८

सोहतहै यहदीनदटजातकै॥ग्रथैप्रतमेजोलोई

तेजांनेजातहै जैसेपीयपारेसगमननसुन्योंमारे

सकेरोगमनइहांभ्रैजांनी॥ग्ये मालाकूरेमाले

कोकूरैइहांभीकोजांनी॥ग्ये जैसेसेनवांनमारने

नवांनकीमारे इहांकलिजांनी॥ग्ये यामेलोकै

सोकरिकीयो॥ग्रथैजांनी॥ग्ये वीयामननहीचिहू

गाकीयाहेमननकीहतविके लीग्ये मुखनिकसेव

मुखतेनिकसैवैन इहांतें॥ग्येलंकपूरयाकालनेहे

नेननहतनेननकोरूप॥अंगधातवि॥ग्यांपातीप्रविते

हुतविषेएकविषेदोइ इस्त्रीलिंग पुलिंग इस्त्रीलिंगवि
षेकी पुलिंग विषेकी जैसे गंगा अरु गहदरयाव नूपकी
गंगासे इहां सुमांनीअ जैसे आठ दोहि पद जो ति इ
हां गंगा आठ आडीहि इहां गंगा जो जांनी गे आगे गो गो
आज गुन गाठ गाठ गठ पातिन वादे वोक भुजीन
कहे सतकै सती ते थग गल गादीय मोन देखी
ती गाठ गाठ गद तिन के पातिन के बोक के सन के सब
तो रथ गत ता के भोनिमानि तुम भन गा दीर इहां टव
रे कुंवनि वी आसं जागी बाने हदो हमांधुवद मोसंव

भा०वि०
८६

इतने इहांको उक्तिनिमें ओजगुन है. ओपद वाकू
जिपा हितिमें अंतरअनत है. अथ वैदर्भी ल. समसम
नन्हिलसमांस नाहि अद्भुसरलानुस्वार नाहि टवर्ग थोरे
लघु मधुर वैदर्भी उच्चार ९६ यथा सोहतचंद
नविंदु सोवंधुर आननइंदु गहि गये दरीमदंगोति
तोनीपगा अतिवद ९७ पांचाली ल० थोरे से समास है
सहल अनुस्वार बहुत वरने है टवर्ग रहत हे पद लघु है
इहां वैदर्भी तिनिमै माधुर्य गुन जे सै मंजुल कंजन तीमै
करमै इत्यादि । कवितमें टवर्ग थोन कैलघु चाहिये

भाषामें कविवचै टवर्गेन णकार नहि चाहे लवर्ग ळोन
कारा लिखे है सर्व इतने चरन भाषा में लिखे र
हित चसु द्व है तने जथा ते जो यश्च नेपाल्वन २
नटवर्गीय राणकार नाडी होर मुमाय रयन होता
लवी सिणकार ८६ वार्ता इहां भाषा में संजोगी ळका
रन चाहिये कवर्गी ह्नकार न चाहिये टवर्गीन
णकार न चाहिये जहां छ कहनो होइ तहां मकार लिखे
जो य बार ह वा है लिखे अकार को ओ गिज हां मकार
ले वे कवी पढ़ा होइ तो अकार लिखे हैं जैसे

भा॰ चि॰ ६० जैमीन वराह जैजै जुगल किसोर इत्यादि सब

जांनी ऐसे लक्षन के पैसी व्यकार बाकपके आगे

आकार होइ की छुलाओ मिलन के वे सर्व लिख्यो

योहे जैसे मेरी भव बाधा हरो इत्यादि के विवेच

न लिखे भाषा में लोग समझि लेत वही है संसकृत

में तौ अन्य चाहीऐ ये वत्त होत है के कोलन

वे भी भाषा में नहीं है उपनागरिका वृत्ति या के वि

हत हैं सो ये भी में अंतर भूत है अब परा वाली

गौडी वृत्ति भी मिले तो चाली है रीति कहत

भलाइ गुन सुबुधि लखैं करि प्रीति ९९ जथा मह
सर्पकंदर्प विषज्वाल रहीअंग छाइ कंजनकी से
न्यनते चंदनसौन लखाइ १०० वातों इहां सजो
गी वरनन गैंडी सानुस्वार वरनसों वे देषी मिले है
पुन गं घोस्यां मस्यामां पुकरल घोमहारसपुंज
पंक्रज पत्र सुखेजजह कुंजनमें बालगुंज १ वातों
इहां भी सजोगी सानुस्वार है मथलादीलछन वो
कोमलपद जहां है तहां उपजत गुन वरलादि ला
डीलीतिहैकलिलालाप नवदलनलवांद २ जथा

भा॰चि॰ ६१ मधरसुधाधातेललनावोलनवालसुबोल लाल
लाललोचनललितलसतसुनीलनिचोल ३
वार्ता दोहामेंकोमलपदहै टवर्गलै॰नाहीकोउ अ
नुप्रासनहीहै दोहामेंकोमलवृत्ति॰अंतरभूतहै
कोईकहतहै॰जोकोई ए चारोरीतिमध्ये॰अलंका
रमै॰अंतरभूतमानतेहै कोईरीतिकोव्यतिकहत
है ॥ अथअनुप्रास स्वरविनलसमतावर्नकी ॥ अनु
प्रासलंकार कोमलकोननवीलोगावृत्तलसुक
विविचार ४ वार्ता स्वरकीहोइहिकोनेकोपरख

आयहनहीं बरनकीसमताचाहीजै कोमलक्षो
ननकोलगेरहास्वरसमांननहीबरनकीसमताहै
यहसाधारनलछन १ अथविसेसलछन छेका अनुप्रा
स जहांपूर्वबर्न अनेककीइकवेरसमताहोइ हे छेका
अनुप्रासलसोतुरसमतातासमझोर २ यथा आए
अंगअनंगभौनेनचैनरसभीन कुंजभवनभाव
नलगीवाहततहांसविलास ३ वीनो अनेकबर्न
ककारमकार वकार इत्यादिबर्नकीसमतासेहु
है १ अथवृत्यानुप्रासलछन [illegible] यरेबहुवेरनकी

भा०कृ०वि०
९२

पत्रचरसमतामोंनि वोंननवसे हैं नैननुवं १ अंगनि
ननी। अनमोंनि ७ वार्ता ऐ कवारन कीछि बाव
डवरनकौ बहुतवार समता होइ इहां नवादकी
वहुतवार समता है पुन: ललचौंहैं चपलौंल
ला चाहत चपलाता नि मदन सदनदर सननु
मनहर छिनलखे निहारि ८ वार्ता इहां अंगे
कवरनकौ १ अने कवार समता है १ अथ अनुप्रा
प्रास कहत अंगत अनुप्रास है औरवानतनुप्रास
वारि अनेनौकोंमि [illegible] पिलवनि पियखेंप्रास [illegible]

यातीसवर्ण छहै कें जंतमें ॥ अनुस्वारहोतहै स्वरअ
नुस्वार ॥ अक्षर जे से हैं तैसे ई र हैइहां ॥ ग्रास ॥ ग्रास
वैअनुनासजेसें वंजनन भंजन ॥ अंजनरंजन ॥ ३
स्वाहिजोनीमें ॥ अथ वृत्ता ॥ अनुस्वार ॥ अनुस्वा
र श्रुतिनानजहां ऐक वरग के होय वानिमनरभा
वतिहैं वधलसन छीनकटि जोय १०। वाती ३
होयवकार भकार मकार वकार ऐकवर्गकेहें अ
सेजोनीमें ॥ अथ सवल ॥ अनुस्वार ॥ अर्थसहनजो
वदापरभोवभ ६ जहं जोह सोलाया ॥ अनुस्वार

मा०वृत्ति०
६३

भावनसवकौविचार १२ मध्या सेवाततीथ्यकैामहा
हैनुलसीश्रीमाल सेवतनुलसीश्रीकहानहीतुल
सीश्रीमाल ९२ वार्ता हैतेनहीकहायहभावमेद
जानोगै ग्रन्थसलेषकर मुजसवडोवतजग
तमेजेकुलमांहतप्रत कैरिगैसे १२ वार्ता वडा
यतश्रीग्रंथउठावतभीहै पदकौलाटानुप्रास व
ध्या कंचनवरनीतायकै मुखहेमु धानिवास
धानिवासमुहेमराज महांनलंकाकोत १४ ग्र
थजनक जमकउलतरप पीरह थर्केमारतेज

य जलते जलहि आयो सबी हंस हंस नल आय
२५ वार्ता हंस जो हंस हंस है विषयों में हंस ताल
सबै मैं नहीं वनैत है यह भास ह्वै है पुनि विरति भ
ज्यो. २६ वार्ता भजन नाम समरण को भजन
नाम भाजि वैको सो न भयो भजन स्मरन न कीर
यह जन्म जोनी गयो पुन तातै यह भास
पैसे जिन हा पुनि हते सो पुनि हते को पद भास भूपति
सो मन को हनै तीय को देहन त्रास २७ वार्ता बा
तको तीय को पद पुनि तको पद भासे है हावाम

दोहा

भो० चित्र २८ इक जांनीऐ नारिन कौ छादु गन द पाति कामिनि कौ
गुरु देत है महालोम वा धारि रहै करे गुरु दोव कसो।
हैं २८ बातें नारि कामिनी जौं नांम पुनरुक्त कसो।
भासै है नारिन कौ छाडे है ग्रेस जांनीऐ सो मधु
कौ नांम है रहांभी सौं मध मलौ गुभाव जांनीऐ
ग्य यह है लिखा जहा कूट सौं ग्रर्थ सो न होलिखा।
तीस चरन मे औ ननैन छत्रीस चारि भुजा न रूप मा
न कौं नौ गुरु देत ग्य सीस २८ या कौं ग्रर्थ स
र्दी जांनीऐ चारि चरन भुजत न कै है करपद्द्रवे

नहीसीस देमुकजो कै दर्या पसनताक्रीवां हमनईस
२० याकी॰ कै मुकीजो नीम्बी ईसकुच गौतर
लापिका बहरलापिकाइनके मनमैमाचि त्रा लेकार
है गयसंस्थाहुस्यलंकार संतकुलभूखनज
होंहैं निरपेक्षयश्रांनि सत्तिमुखतेरेइगक्रमल
पक्केवहै मनुपांनि २१ वार्ता रहांउपमाहूपक
उत्येसाग वश्रीलंकारकीसंस्ता छि है त्किलतंइल
कीतरह जेहजुहारीवाति है विहारी गुरतमुत॰
२२ वार्ता रहांघतिग्गमनुनासलनाको क्रीवीनतर

भा०चि० मथ तीन तरै को संकर उत्पन्न होत है ऐसे को जहां संदे
२५ ह लबाह इकपद मैं भूषन बहुत वे सेष को कहि जा
२२ यातें ऐक अलंकार जहां ऐक अलंकार को उ
पकारक है सो जहां संदेह लगै यह अलंकार है कि
यह अलंकार है सो जहां ऐक पद मैं दोइ तीन अ
लंकार होइ तहां संकर है इत तीन तरै को संकर
गयो ऐक अलंकार ऐक अलंकार को उपकार के
भोसला तिनु वडारी विधानि केली नै भूषन ज्यों नि
हाल लालि कहौ चित्र गद्य हुतन ज्यों गुरु जी जानि २४

यातौ दृष्टांत दृगुन सो भ्रांत्यापन्ह्लं क्काहृ उपज्यो है वि
हारी बलवत इ स्वल्प करयवे कै टैन कुवित कुठार
॥ भ्रान्त बाल उरज्ञानरी परि मिमन तरु जर २४ याते
दृष्टांत रूपक सौं विसेषोक्ति उपज्यो है बलवत इ
रूपक ॥ अंग विसेषोक्ति ॥ अंगी जानौ ॥ ये कुवत कु
ठार को टवे कौ कारन है जो कछु नौ है कार्य सो न हीं
उपज्यौ ॥ याके देखे तौ संकर कीयकै नेन चकोर
कौ उपजावत ॥ आनंद लखी नोल ॥ अमर महोरा
जतनतो मुख चंद २६ तेरो मुख चंद मा सो राजि

भागवत
९९

तोसेंलु श्रीपमां किंवा मुखसो ई चेइसो हे तपकेहै
हसे २९ मूल करी हमारी ही यथारीत जो ललो
लिखवाने नैनानि कों सुखदेतइह ईद विवसदस्यात
२७ वार्ता कांमक्रोउद्दीपकरन वालोइहकाल
है यावानकों वनाइके एकतरह कहत हैं याते
परयाये क्रि ग्रसंवार है किंवा साधवसोनाल
छनाकरिकैं इदविबसोनाइकाकों सुखलवीप
नों याते हपकां तिसयो क्रि है यहसंदेहलोसंब
रभयो ॥ ग्रथ एकपदलें ॥ मनेकग्रसंबारचिन्हो

उरली कै भ्रांति वृंदवट्टी सुनि मुरली धुनि धाइ होइ
लसी निकसी सु ती गयो हु लसीलाइ २०८ यातैं मु
रली धुनि सुनि वौ पहलु षकौं उद्यम कीयो तातें हु
ष भयो यातें विभमालंकार हुलसी हुलसी जमपु
जो नी गे हुलसी उठे छराभई भ्रानुमान विभमा
लंकार की मतीति तुरत नहीं होति है यातें संकरा
लंकार लछन अर्थ सब्द कौं करत है जो र
सकौं उपकार भूषन जैसें जीव कौं लोक ही भैसें
२ ३ और सब्द अर्थ की चिवता चिंता रुचि

भ.भ.वि.न
२८

विदेत असंवारमासौं कहै जैकविसुमतिनिकेत
॥३१॥ अयटीकाकारकीइस्यतीवर्नन सालग्राम
कीसरजगीमिलीगंगजसौंधार अंतरालमैंदेत
हैंसोसारनसरकार ॥३२॥ बरगसागोआतहां
लसैचैनपुरग्राम तहांत्रिपाठीरामधनवास
कीयौंअभराम ॥३३॥ ताकेसुतहरिकविकीयो
मारवारमैंवास भाषाभूखनग्रंथकीटीकाक
रैप्रकास ॥३४॥ उतहतनदीनेवहुतबुन्दवनाव
नकाज बुलेनवालककहेसुपढिलाखिहेसुकविस

माज ३४ कवित्त कहांकाहि भाई भरथआदातनु
गाई रामचंद्रनबाढौंचम् मैं नतादरौ कुह्माई है ऐसु
हु नबास बनबास मैं कवासकौ है रख मीघहांनै
चौरचाहरसुहाई है ऐसेहीकसालामैं परी है
लंकपालाखुल्यौ बानन कौतालादेबवारनतं
गाई है तीनलोककातामकदीजी ऐसुखनधा
तातासौंकोई देरोनहातारघुराई है ३५ सवैया
हारिहकेदजवारिधमोहवहानगहीहरिबांहजा
बीनै यावतनारक चामरकेमघवाकेसमोनम

भा॰वि॰ हीपावतजीनो मोहनलालसौंदीनदयालकोसोच
९२ विनाजिनकेहैं॰ अधीने हैंनोनजाकोहि॰ ढकुहदा
जमौंहादलकेतिनमंदिरसीने ३६ दोहो वृतोहि
तश्रीनंदके मुनिसांडिल्यमहान मेहैंतिनको
नमैंमोहनमोजजमान ३७ भाषाहैसोईनह
वरनैंप्रभुगुनसार ३८ चौनीचोहोतहैंजहांनही
निरधार ३९ संवतनारासेविनेतापरेचोंपतसजा
न टीकाकीनौपूलदिनगुरदसमी॰अवदात ४० दे
नेश्रीभाषाभूषनटीकाचमत्कारचंद्रकालपूरनं
लिषतंईस्वरधोतलपुरबासीमुकंमपदप्पोलेस्योरो

आपके॥मथाईमैं दोहा रस इंदु पुनि षंड रवि संवत
ग्रीषम जानि जेठ सुदी छटि अर्कको लिख्यो ग्रंथ
सुषसानि १

वांगमन